छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र

माह- कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् 2075

नवम्बर 2018

ओ३म्

अंक 158, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

हे ऋषिवर ! तुम्हें शत-शत नमन

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइंस भिलाई में विगत दिनों सम्पन्न

ग्रैंड पेरेंटस् डे

एवं पोषक आहार सप्ताह

जागरुकता एवं संदेश

कार्यक्रम की

चित्रमय झलकियां

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष – १४, अंक ०४ — ओ३म् — मास/सन् – नवम्बर २०१८

विक्रमी संवत् – २०७५
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द – १९५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सभ्रसभ्रकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
प्र. कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	अहर्निश त्राण और रक्षा करो	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	राष्ट्रीयता का अग्रदूत-आर्यसमाज	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	जिन्दादिल जागो, मुर्दों से रही न कोई आस	आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	०८
४.	योग किया नहीं जाता, जीया जाता है	आचार्य धर्मवीर	११
५.	"वेद" मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है .	ओमप्रकाश आर्य	१४
६.	महर्षि के विचार दीपों की अमरज्योति	स्व. आचार्य भद्रसेन	१७
७.	महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज मुझे क्यों प्रिय हैं	मनमोहन कुमार आर्य	१९
८.	महर्षि दयानन्द ही क्यों ?	आचार्य अजय आर्य	२३
९.	देवतास्वरूप भाई परमानन्द	राजेन्द्र जिज्ञासु	२६
१०.	स्वामी दर्शनानन्द	डॉ. अशोक आर्य	२८
११.	पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	अनिल कुमार आर्य	२९
१२.	होमियोपैथी से अस्थमा का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३१
१३.	समाचार प्रवाह		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

अहर्निश त्राण और रक्षा करो

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अद्याद्या श्वः श्वः, त्रास्व परे च नः।
विश्वा च नो जरितन्त्सत्पते अहा, दिवा नक्तं च रक्षिषः॥ ऋग्. ८.६१.१७

ऋषिः भर्गः प्रागाथः। देवता इन्द्रः। छन्दः शंकुमती बृहती।

● (इन्द्र) हे परमेश्वर! (अद्य अद्य) आज-आज (श्वः श्वः) कल-कल (परे च) और परसों आदि परे, (नः) हमारा (त्रास्व) त्राण कीजिए (च) और (सत्पते) हे श्रेष्ठों के रक्षक! (नः) हम (जरितन्) स्तोताओं की (विश्वा) सब (अहा) दिवसों में (दिवा) दिन में (नक्तं च) और रात्रि में (रक्षिषः) रक्षा कीजिए।

आज जबकि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को निगलने के प्रयास में संलग्न है, और प्रत्येक अपने को असुरक्षित समझ रहा है, तब हमें आपत्तियों से त्राण और सुरक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। त्राण का अर्थ आगत विपत्तियों, दुःखों, विघ्नों, बाधाओं और शत्रुओं आदि से बचाना और सुरक्षा से अभिप्रेत है अपनी वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रिय जीवनी-शक्ति को बढ़ाना तथा उन्नति एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करना। यह त्राण और रक्षण हमें वही प्रदान कर सकता है, जो स्वयं वीर है तथा आत्मनिर्भर है। जिसे अपने ही त्राण और रक्षण के लिए परमुखापेक्षी होना पड़ता है, वह दूसरों का त्राण और रक्षण भला क्या कर सकेगा। विश्व-ब्रह्माण्ड में सबसे बड़ा वीर और पराक्रमी तो हमारा इन्द्र प्रभु है। अतः हम उसी की शरण में जाते हैं, उसी की बांह पकड़ते हैं। हे जगत्पति! आप आज भी, कल भी, परसों भी और आगे-आगे आनेवाले दिनों में भी हमारा त्राण करते रहिए। आप स्वयं शस्त्र उठाकर शत्रुओं से हमारा त्राण करें और हम अकर्मण्य होकर बैठे रहें, यह हमारा आशय नहीं है। हम तो यह चाहते हैं कि आप हमारे हृदयों में बल का संचार कीजिए तथा अपना वरद हस्त हमारे ऊपर बनाये रखिये, जिससे हम जीवन में आनेवाली विघ्न-बाधाओं से त्राण पा सकें। आप हम स्तोताओं की सब दिवसों में अहर्निश सुरक्षा भी करते रहिए, जिससे आपकी सुरक्षा एवं प्रेरणा पाकर हम निरन्तर नवीन-नवीन उत्कर्ष को प्राप्त करते रहें।

हे सत्पति! हम जानते हैं, स्तुति में बड़ा बल होता है, और फिर सामूहिक स्तुति तो और भी अधिक बलवती होती है। अतः हम सबकी सम्मिलित स्तुति से द्रवित हो आप हमारे त्राण और हमारी रक्षा का बीड़ा उठाइये। हे प्रभु, हमारी आपसे यही प्रार्थना है, यही विनति है। इसे पूर्ण कीजिए, पूर्ण कीजिए।

मन्त्राय-टिप्पणी - १. जरित स्तोता २. शिप्रे हनु नासिके वा (निरु. ६.१७) शोभने शिप्रे यस्य स सुशिप्रः सुमुखः। ३. वश कान्तो, लेट। ४. कृ लेट्।

सम्पादकीय

राष्ट्रीयता का अग्रदूत - आर्यसमाज

सहृदय पाठको !

आप सभी जानते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी भारतीय पुनर्जागरण के काल से सुविख्यात है। इसी काल में भारत में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा राजनीतिक नवचेतना का उदय हुआ था। परिणामस्वरुप शताब्दियों से सोये भारत ने फिर से जागृति की करवट ली थी। नवजागरण के इस काल में जागृति की संदेशवाहक कई एक संस्थाओं का आविर्भाव हुआ था। ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी तथा रामकृष्ण मिशन आदि इनमें प्रमुख हैं। इन सभी संस्थाओं ने प्रसुप्त भारतीयों को जगाने का भरसक प्रयत्न किया था तथापि इतिहास के निष्पक्ष किन्तु गंभीर अध्ययन से यही तथ्य प्रमाणित होता है कि इस अवधि में देश के क्षितिज पर नवजागरण का प्रबलतम उद्घोष यदि किसी एक संस्था का गूँज रहा था तो निश्चय ही वह आर्यसमाज ही था। विगत शताब्दी के पुनर्जागरण के आन्दोलनों में आर्यसमाज आन्दोलन के जागृति के स्वर ही कुछ निराले थे। तभी पुनर्जागरण के आन्दोलनों का वह शिरमौर बन सका।

भारत में पुनर्जागरण के आन्दोलनों के उदय से पूर्व देश गहरी निद्रा में सोया हुआ था। शताब्दियों तक गुलाम रहने के कारण उसकी राजनीतिक चेतना मर चुकी थी। यहां तक कि उसका धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान तक जाता रहा था। और लगता था कि उसकी आत्मा ही मर चुकी हो। हर अपमान को कड़वा घूंट समझ कर नहीं, हँस कर सहने की अभ्यासी बन चुका था वह। अंग्रेजी शिक्षा और विज्ञान के नवीन आविष्कारों ने तो उनमें और भी हीन भावना भर दी थी। भारतवासियों को यह पढ़ाया जाने लगा कि उनके पूर्वज सदा से ही मूर्ख रहे हैं और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर ही वे सभ्य और सुशिक्षित बन सकते हैं। भारत में अंग्रेजी शासन को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए लार्ड मैकाले ने एक कूटनीतिपूर्ण योजना बनाई थी, जिसका उद्देश्य भारतवासियों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान कर मन और मस्तिष्क से पूर्ण अंग्रेज बना देना था। ईसाई प्रचारक इस कार्य में अंग्रेजों को अपना पूर्ण सहयोग दे रहे थे। अंग्रेजी शिक्षा तथा ईसाई पादरियों के प्रचार ने भारतीयों को सर्वथा स्वाभिमान-शून्य हीन-भावना-ग्रस्त बना कर रख दिया था।

ईसाई पादरी भारत में प्रचलित धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों का प्रबल खण्डन करने लगे थे। इसके परिणाम-स्वरुप थोड़ा बहुत पढ़े-लिखे लोग नई रोशनी के प्रभाव से परम्परागत कुरीतियों से चिपटे रहने में लज्जा का अनुभव करने लगे। नवजागृति का एक कारण यह भी था, किन्तु इसका दुष्परिणाम यह निकला कि भारतवासी एतद्देशीय चलन छोड़ कर विदेशी चलन अपनाने लग गये। ब्रह्म समाजी भी इसी प्रवाह में बह गये। उन्होने भी रुढ़िवादी भारतीय परम्पराओं को त्याग डाला, यहां तक

कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और धर्म तक को त्यागने में भी उन्हें कोई संकोच न था। दूसरी ओर थियोसोफिकल सोसायटी तथा रामकृष्ण मिशन वाले भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हीं पुरानी घिसी-पिटी रुढ़िवादी परम्पराओं की वैज्ञानिक व्याख्यायें प्रस्तुत कर उनके औचित्य को सिद्ध करने में जुट गये। परिणामस्वरुप समाज में एक अभूतपूर्व हलचल सी सर्वत्र मच गई और लोगों में चेतना का संचार होने लग गया।

तर्काश्रित बुद्धिवाद पर अधिष्ठित आर्यसमाज का दृष्टिकोण इन दोनों धाराओं से सर्वथा भिन्न था। इसने पश्चिम से प्रभावित ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना-समाज की भांति प्रत्येक भारतीय वस्तु तथा परम्परा को हेय नहीं माना और न ही रामकृष्ण मिशन तथा थियोसोफिकल सोसायटी की भांति किन्ही निरर्थक रूढ़ियों का ही समर्थन कर उनकी वैज्ञानिक व्याख्यायें ही प्रस्तुत की। आर्यसमाज ने मध्यकालीन भारत की रूढ़ियों को हटाकर प्राचीन भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को लौटाने का प्रयत्न किया। आर्यसमाज न तो पश्चिमी चकाचौंध से प्रभावित हुआ और न ही उसने नवीन ज्ञान-विज्ञान से मुंह मोड़ा। साथ ही आर्यसमाज गोरे पादरियों के भ्रामक प्रचार का मुँह-तोड़ उत्तर देने में भी नहीं चूका। आर्यसमाज के इस कार्य से चारों ओर एक अपूर्व क्रान्ति-सी मच गई। आर्यसमाज मध्यकालीन गौरव की याद दिलाता था। देश के गौरवमय अतीत की याद दिलाकर आर्यसमाज ने हीन भावनाओं को दूर किया। परिणामस्वरुप भारत अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो उठा।

आर्यसमाज ने देश में सांस्कृतिक नवचेतना ही उत्पन्न नहीं की अपितु उसने देश में राष्ट्रीय नवचेतना को भी जागृत करने का स्तुत्य प्रयास किया था। पुनर्जागरण का कोई भी अन्य आन्दोलन यह कार्य नहीं कर सका था। इसे केवल आर्यसमाज ने सम्पादित किया। डॉ. कमलकान्त नेआर्यसमाज के इस कार्य का मूल्यांकन करते हुए लिखा है - **"उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में भारत का जो राष्ट्रीय जागरण हुआ, उसमें आर्यसमाज का अप्रकट पर प्रधान हाथ था।"** वस्तुतः भारत में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का स्तुत्य प्रयत्न आर्यसमाज द्वारा ही सम्भव हो सका था। आर्यसमाज ने ही राष्ट्रीय शिक्षा का न केवल विचार ही दिया अपितु उसे मूर्तरुप भी प्रदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द आदि अनेकों आर्यसमाजी नेताओं ने राष्ट्रीयता के सशक्त स्वर फूंके थे। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की अलग से स्थापना भी इसीलिए की थी कि पूर्व संस्थापित ब्रह्म समाज आदि संस्थाओं में देश भक्ति का अभाव उन्हें खटकता था। जबकि आर्यसमाज का मंच राष्ट्रीयता का प्रबल समर्थक एवं सशक्त हस्ताक्षर था। इतिहास साक्षी है कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज सदैव पहली पंक्ति में खड़ा दिखाई दिया है।

बौद्धिक जागरण आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण था और बौद्धिक जागरण में आर्यसमाज की भूमिका सर्वविदित ही है। आर्यसमाज ने तर्क-वितर्क, खण्डन-मण्डन और शिक्षा-प्रसार ने जनमानस में बुद्धिवादिता की प्रधानता ला दी। अन्य आन्दोलनों की तुलना में आर्यसमाज बुद्धिवादी दृष्टिकोण पनपाने में अधिक सफल हुआ था। यह भी सत्य है कि आर्यसमाज ने जब राष्ट्रीय चेतना हेतु क्रान्ति का बिगुल बजाया था तो उसका प्रभाव भी बौद्धिकवर्ग पर सर्वाधिक पड़ा था। नारी-शिक्षा का प्रसार आर्यसमाज के बौद्धिक आन्दोलन का ही परिणाम कहा जायेगा। आर्यसमाज में बौद्धिकता की प्रधानता को देखकर ही कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था - **"महर्षि द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज में विज्ञान की कसौटी पर चढ़े हिन्दुत्व का निखार था।"** वस्तुतः आर्यसमाज के नेता ऐसा बौद्धिक जागरण चाहते थे जो आधुनिक युग की प्रगतिशील भावना के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके और साथ ही साथ देश के उस गौरवशाली अतीत के साथ अटूट सम्बन्ध कायम रख सके, जिसमें भारत ने अपने व्यक्तित्व का कार्य तथा चिन्तन की

स्वतन्त्रता में और आध्यात्मिक साक्षात्कार के निर्मल प्रकाश के रुप में व्यक्त किया था। यद्यपि ब्रह्म समाज ने बौद्धिक जागरण में कोई कम भूमिका नहीं निभाई तथापि इन दोनों में जो अन्तर है, उसकी ओर हंसकोहन संकेत करते हुए कहते हैं कि - **"यद्यपि ब्रह्म समाज और आर्यसमाज एक ही क्रान्ति की उपज थे, किन्तु यह आर्यसमाज ही था जिसने प्राचीन भारत को जगाकर बीसवीं शती के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।"**

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व आर्य जाति की बड़ी दुर्दशा थी। घोर निराशा के व ातावरण ने जातीय स्वाभिमान को समूल नष्ट कर दिया था। एक ओर लार्ड मैकाले की कूटनीति अपना रंग जमा रही थी तो दूसरी ओर ईसाई पादरियों की कुचालें अपना चमत्कार दिखा रही थीं। ईसाई पादरी पौराणिक हिन्दू धर्म की खिल्ली उड़ाना अपना धर्म समझते थे, और हिन्दू जाति उसे चुपचाप बिना किसी प्रतिक्रिया के सहन कर लेती थी। इस संबंध में पं. चमूपति जी का यथार्थ कथन है कि- **"आर्यसमाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदण्ड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई गाली दे, उसकी हंसी उड़ाये, उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उनके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है, फिर भी, इन सारे अपमानों के सामने वह दांत निपोर कर रह जाता था। लोगों की यह शंका उचित हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं, अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं। किन्तु आर्यसमाज के उदय के बाद अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गई। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा। आज हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरुरत हुई तो धर्मरक्षार्थ प्राण भी दे सकता है।"** विज्ञ पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि हिन्दुओं मे यह नवचेतना, नव-स्फूर्ति किसने भर दी ? निश्चय ही आर्यसमाज ने . डॉ. कर्णसिंह इस तथ्य को स्वीकाते हुए लिखते हैं कि - **"आर्यसमाज ने दिखा दिया कि जो हिन्दू धर्म दीर्घकाल तक अपने ही निर्मित क्षीरसागर में शेषशैया पर सोता रहा है, वह अब तेजी से प्रबुद्ध हो रहा है और उन्नीसवीं सदी का सामना करने को तैयार है।"** इस प्रकार आर्यसमाज हिन्दुत्व की "खड़गधर बांह" सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि भारतीय पुनर्जागरण में आर्यसमाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रभावशील भूमिका रही है। पुनर्जागरण में उसका योगदान विशेष उल्लेखनीय है। अन्य समकालीन आन्दोलनों की अपेक्षा आर्यसमाज का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा और उसका क्षेत्र भी अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और विशाल था। वस्तुतः पुनर्जागरण के आन्दोलनों में अपनी विशिष्ट ज्ञान-निष्ठा, कर्मनिष्ठा, समाज निष्ठा, स्वदेशनिष्ठा आदि के कारण आर्यसमाज अन्य आन्दोलनों को इस क्षेत्र में पछाड़ता हुआ आगे निकल गया। आर्य,समाज ने युग की आवश्यकता को भली-भांति समझा था और उसकी आवश्यकताओं के अनुरुप ही युग को नया मोड़ भी देने में सफल हुआ था। वस्तुतः वह युग की पुकार पर खरा उतरा है और वह अपनी इस भूमिका पर यथोचित गर्व भी कर सकता है।

जब तक अग्निदूत का यह नवम्बर अंक आपके हाथ लगेगा तब तक भारत की राजधानी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (२५, २६, २७ एवं २८ अक्टूबर २०१८) सफलता की सर्वोच्च शिखा का स्पर्श कर सम्पन्न हो चुका होगा। और एक बार विश्व को पुनः अपने क्रान्तिकारी योजनाओं से अवगत कराके पुनः एक जोश एवं उत्साह के साथ वैश्विक चुनौतियों का समाधान ढूंढकर पदार्पण कर चुका होगा। दिग्-दिगन्त में वेदों के पावन सन्देशों को महर्षि के सुविचारित मन्तव्यों को जनव्यापी बनाने के अपने संकल्प पथ पर चलने को समाज सन्नद्ध हो गया होगा।

आइए, इसी युगान्तकारी विचारों को हृदय में धार हम अपने पावन संकल्प को पुनरावर्तन करें कि यावज्जीवन इस समाज को स्वस्थ समृद्ध एवं सशक्त बनाने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहेगे।

- आचार्य कर्मवीर

ज्वलन्त समस्या

जिन्दादिल जागो, मुर्दों से रही न कोई आस

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

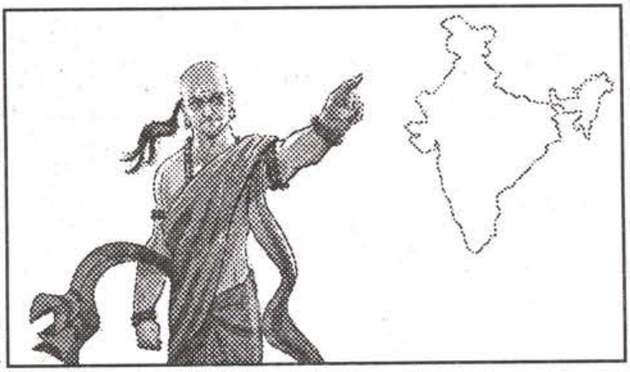

प्यारे देशवासियों! आज आपकी संस्कृति व सभ्यता व आदर्शों को चुन-चुन कर नष्ट किया जा रहा है। कहीं न्यायालय (?) तो कहीं संसद। जिसे अवसर मिलता है, इस राष्ट्र के आत्मा को क्षत विक्षत करने लगता है। लिन इन रिलेशन जैसी पापी निर्णय पर आप मौन रहे, समलैंगिकता के दुराचार को सदाचार बताने पर आपकी नींद नहीं खुली और अब विवाहेत्तर यौन सम्बन्धों को वैध बताने पर भी आपमें कोई हलचल नहीं।

हे राष्ट्र व संस्कृति के नाम पर मेज पीट-पीट कर भाषण देने वाले भाईयों व बहिनों! क्या आपके शरीर में प्राण संचार हो रहा है अथवा सर्वथा बन्द हो गया है? यदि नहीं, तो आप क्यों इन पापों के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं करते हो? टी.वी. चैनलों पर आये दिन सुर्खियां बटोरने वाले! क्यों आप मीडिया के माध्यम से इन निर्णयों का विरोध करते? देश के जीवित सांसद! क्यों आप इस पापी निर्णय के विरुद्ध एकजुट होकर सांसद में बिल लाने का प्रयास नहीं करते? करोड़ो, अरबों ही नहीं, खरबों की सम्पदा के ढेर पर बैठे कथित धर्माचार्यों वा समाज सुधारकों! क्यों आप अपनी शक्ति व धन का प्रयोग मां भारती की अस्मिता की रक्षा में व्यय नहीं करते?

हे हिन्दु धर्माचार्यों! हे मौलवियों! हे पादरियों! हे ज्ञानी महानुभावों! हे बौद्ध व जैन मतावलम्बी साधु व साध्वियों! आप अपने-अपने सम्प्रदाय के दृष्टिकोण से ही सोचो! क्या कोर्ट के ये पापपूर्ण निर्णय आपको निन्दनीय नहीं लगते? यदि हाँ, तो उठो, इस पाप के विरुद्ध खड़े हो जाओ! सांसदों को विवश करो, राष्ट्रपति को निवेदन करो, कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर करो, युवा पीढ़ी को बचाओ, पारिवारिक ढांचे की रक्षा करो अन्यथा सब लुट जायेगा। यदि आप यूं ही सोते रहे, तो ये अन्यायालय न जानें इस देश को कितना पतित करेंगे? वैसे भी सब कुछ लुट गया है अब बचा ही क्या है? इस अभागे देश की मिट्टी का एक-एक कण नदियों व समुद्रों के जल तथा वायुमण्डल का एक-एक अणु पापियों के पाप से दूषिद हो गया है। धर्मात्मा व सज्जनों के लिए अब यहां रहना, यहां तक कि इसके वायुमण्डल में श्वांस लेना भी दुष्कर हो गया है। जो अपने को वामपंथी, नास्तिक या प्रगतिशील मानते हैं, उन्हें क्या ये पशुता के कानून उचित प्रतीत होते हैं? यदि नहीं, तो उन्हें भी उठाना चाहिए और यदि वे इन्हें उचित मानते हैं, तो उन्हे विवाह आदि परम्पराओं से सर्वथा मुक्त होकर पूर्णरुप से पशु बन जाना चाहिए, ताकि कोई बन्धन रहे ही नहीं।

मेरे भारत के सज्जन बन्धुओं बहिनों! यदि आपको अपनी संस्कृति व धर्म से प्यार है, तो उठो, अन्यथा आपकी पीढ़ी खून के आंसू बहायेगी अथवा निर्लज्ज पशु बन जायेगी। मैं तो शरीर से लगभग जन्म से ही अस्वस्थ रहा, धन मेरे पास नहीं है, संगठन भी नहीं है। यदि शरीर भी स्वस्थ व बलवान् होता, तो देश को जगाने के लिए यायावर बनकर निकल पड़ता, परन्तु मैं विवश हूँ। केवल लेखनी ही चलाने तक सीमित हूँ। कभी-कभी मन कहता है कि बौद्धिक दासता के पापापंक में डूबे देश को मरता छोड़ पाण्डवों की भांति हिमालय के लिए अन्तिम यात्रा पर निकल जाया जाए। अब वेद विज्ञान पर अनुसंधान करने की इच्छा भी

इस पापी देश में मरती जा रही है।

शोक है ! इस अभागे देश पर ! जब महाभारत युद्ध तथा स्वयं के कुल के नाश को भगवान् योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महाप्रतापी महामानव नहीं रोक सके, तब मेरा सामर्थ्य ही क्या है ? पुनरपि उन्होंने अपना पूर्ण पुरुषार्थ किया और मैं उनका सच्चा अनुयायी हूं, तो मुझे भी पुरुषार्थ करना चाहिए, यही सोचकर अभी लगा हूँ। काश ! योगेश्वर श्रीकृष्ण जी जैसे सुदर्शनधारी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे धनुर्धर, भगवान महादेव शिव जैसे पाशुपत अस्त्रधारी, भगवान विष्णु जैसे ब्रह्मास्त्र धारी, वज्रपाणि देवराज इन्द्र, महावीर अर्जुन जैसे योद्धा महावीर वज्रांग हनुमान व महाबली भीम जैसा कोई धर्मात्मा योद्धा आज इस भारत में होता, तो देश में वो पापाचार नहीं बढ़ता। परन्तु अब ये नाम ही बचे हैं। इस कारण मैं इनके भक्तों को आह्वान करता हूं कि उठो और अपनी अस्मिता को बचा लो।पत्र अभियान प्रारम्भ करो, लेखन द्वारा सबको जगाओ। आशा है आपका स्वाभिमान मरा नहीं होगा।

"सर्वोपरि महर्षि दयानन्द"

- खुशहालचन्द्र आर्य

ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती, किसी एक व्यक्ति महान से।
तेरी तुलना तो हो सकती है, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और आसमान से ।।
तेरी तुलना मैं श्रीराम से करूँ, वह कृष्णा जैसा था कूटनीतिवान नहीं,
तेरी तुलना करूँ, कृष्ण से, उसने रखा मर्यादा का इतना ध्यान नहीं,
दयानन्द, तेरे अन्दर दोनों के समस्त गुण, पाये जाते हैं समान से .... १.

तेरे तुल्य मैं समझूँ बुद्ध को, वह आदि शंकर जैसा था विद्वान् नहीं,
तेरी तुलना करूँ शंकर से, वह बुद्ध जैसा मिला दयावान नहीं,
तेरे अन्दर दोनों के गुण थे, कह सकते हैं हम स्वाभिमान से ...... २.

तेरी तुलना करूँ मैं भीम से, उसने रखा ब्रह्मचर्यव्रत महान् नहीं,
तेरी तुलना करूँ भीष्म से, उसने अन्याय पक्ष लेकर रखा अपना सम्मान नहीं,
दोनों के गुण विद्यमान् थे, पता लगता है आपके व्यक्तित्व महान् से ... ३.

तेरी तुलना करूँ कालिदास से, उसमें चाणक्य जैसा था देश स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूँ चाणक्य से, उसमें मिलता सहनशीलता गुण प्रधान नहीं,
दोनों के गुण पाये जाते, आपका जीवन चरित्र पढ़ते हैं जब ध्यान से ....४.
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती,........ ।

तेरी तुलना करूँ केशव सेन से, जिसमें भारतीय संस्कृति पर था स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूँ गांधी से, जिसने सोचा तुष्टीकरण का परिणाम नहीं,
दोनों के गुण भली-भांति जाने जाते, आपके किये जन-कल्याणी काम से ...५.

"खुशहाल" ने खोज लिया सारा इतिहास, इस प्यारे देश की शान का,
कोई भी महापुरुष पाया नहीं, ऋषि दयानन्द के चरित्र के समान का,
अब इच्छा होती है, तुलना करूँ, दयानन्द का दयानन्द समान से ... ६
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती,..... ।

पता : गोविन्दराम आर्य अण्ड सन्स १८०,
महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

ooo--ooo

विश्लेषणात्मक

योग किया नहीं जाता, जीया जाता है : आचार्य धर्मवीर

प्रस्तुत लेख वर्षों पूर्व स्व. डॉ. धर्मवीर जी ने परोपकारी के किसी सम्पादकीय के लिए लिखा था। आर्ष परम्परानुसार व्यवहारिक एवं सामयिक जान पुनः प्रकाशन किया गया है। - सम्पादक

वर्तमान समय में योग एक बहुत प्रचलित शब्द है, परन्तु अपने अर्थ से बहुत दूर चला गया है। योग के सहयोगी शब्दों के रुप में समय-समय पर कुछ शब्दों का प्रयोग होता रहता है - योगासन, योग-क्रिया, योग-मुद्रा आदि। इसी प्रकार कुछ अलग-अलग क्रियाएँ, जिनसे प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है, उनका भी योग नाम दिया गया है- राजयोग, मन्त्रयोग, हठयोग आदि। इनसे परमात्मा की प्राप्ति होना अलग-अलग ग्रन्थों में बताया गया है। मूलतः योग शब्द का अर्थ जोड़ना है। जोड़ना गणित में भी होता है , अतः संख्याओं के जोड़ने को योग कहते हैं। जिस कार्य से प्रयोजन की सिद्धि न हो, उसे वह नाम देना निरर्थक है। योग में किसी से जुड़ने का भाव अवश्य है। हम समझते है, योग प्रातःकाल-सायंकाल करने की चीज है। योग चाहे आसन के रुपमें किये जायें, चाहे साधना के रुप में। आसन के रुप में योगासन स्वास्थ्य के लिये किये जाते हैं, किन्तु पूरे दिन स्वास्थ्य-विरोधी आचरण करते हुए योगासन करके कोई स्वस्थ नहीं हो सकता, क्योंकि प्रातःकाल-सायंकाल योगासन करके शरीर को सक्रिय तो कर लिया, परन्तु भोजन और विश्राम के द्वारा ऊर्जा का संग्रह किया जाता है। भोजन, विश्राम यदि ठीक नहीं तो आसन व्यर्थ हो जाते हैं। व्यायाम, आसन, प्राणायाम आदि से तो तन्त्र को दृढ़ता और सक्रियता प्रदान की जाती है। उसी प्रकार योग-साधना का प्रयोजन परमेश्वर से मिलना है, उससे जुड़ना या उस तक पहुंचना है। यदि योग परमेश्वर तक पहुंचने के उपाय का नाम है, तो विचार करने की बात यह है कि उस परमेश्वर की प्राप्ति का यत्न तो प्रातःकाल सायंकाल घण्टा-दो-घण्टा किया जाये, उससे दूर होने के काम सारे दिन में किये जायें तो कल्पना कर सकते हैं कि हम कब तक परमेश्वर को मिल सकेंगे ? यह तो ऐसा हुआ जैसे प्रातः-सायंकाल अपने गन्तव्य की ओर दौड़ लगाना और दिनभर उसके विपरीत दिशा में दौड़ना। ऐसा व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर तक भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। इसी प्रकार पूरे जीवन प्रातः-सायं सन्ध्या, योग करते रहने वाला कभी भी परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकता, क्योंकि वह उद्देश्य की ओर थोड़े समय चलता है, उद्देश्य के विपरीत अधिक समय चलता है। ऐसा व्यक्ति लक्ष्य से दूर तो हो सकता है, परन्तु लक्ष्य तक कभी भी नहीं पहुंच सकता।

योग परमेश्वर तक पहुंचने का उपाय है, तो यह कार्य कुछ समय का नहीं हो सकता। जैसे कोई व्यक्ति यात्रा पर निकलता है, तो सभी कार्य करते हुए भी उसकी यात्रा, उसी दिशा में निरन्तर आगे-आगे बढ़ती रहती है। मार्ग में वह सोता है, खाता है, बात करता है, किन्तु उसकी न तो यात्रा की दिशा बदलती है, न यात्रा पर विराम लगता है और वह देरी से या जल्दी गन्तव्य तक पहंच ही जाता है। इसी कारण वेदान्त दर्शन में साधना कब तक करनी चाहिए- इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया है - **आ प्रायणात्तत्रापि दृष्टम्**। लक्ष्य की प्राप्ति तक साधना करने का विधान किया गया है, अतः योग केवल प्रातःकाल-सायंकाल की जाने वाली क्रिया नहीं है। वह जीवनरुपी यात्रा है, जिसका प्रयोजन परमेश्वर तक पहुंचना या उसे प्राप्त करने है। यह यात्रा तब तक समाप्त या पूर्ण नहीं हो सकती, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये। यह जीवन-यात्रा कैसे सम्भव है ? इसको बताने वाले अनेक शास्त्र है, परन्तु योगदर्शन इसका सबसे अधिक व्यवस्थित, उपयोगी एवं सरल शास्त्र है। इस सारे योगदर्शन को संक्षिप्त किया जाये, तो तीन

सूत्रों में बांधा जा सकता है, शेष शास्त्र तो इन सूत्रों का व्याख्यान है।

प्रथम योग कैसे होता है, यह सूत्र में कहा गया है- **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**। चित्त की वृत्तियों के निरोध-अवरोध करने का नाम योग है। जब चित्तकी वृत्तियां में अर्थात् उनका बाह्य व्यापार रुक जाता है, तो प्रयोजन की प्राप्ति हो जाती है। अगले सूत्र में बतलाया गया है, वह प्रयोजन क्या है, जो चित्त के बाह्य व्यापार को रोकने से सिद्ध होता है ? तो पतञ्जलि मुनि कहते हैं - तदा द्रष्टुः स्वरुपे अवस्थानम्। चित्त का कार्य ही आत्मा को संसार सो जोड़ना है, जब उसे संसार से जोड़ने के काम से रोक दिया जाता है तो वह बाहर के व्यापार को छोड़ कर भीतर के व्यापार में लग जाता है। उसके भीतर का व्यापार आत्मदर्शन कहलाता है, जब वह स्वयं में स्थित होता है, तो अपने में स्थित परमात्मा का भी उसे सहज साक्षात्कार होता है, अतः योग परमात्मा के साक्षात्कार करने का नाम है। जब हमारा चित्त हमारी आत्मा में नहीं होता तो निश्चित रुप से विपरीत दिशा में लगा होता है। क्योंकि मन एक क्षण के लिए भी निष्क्रिय नहीं रहता, अतः मनुष्य के सोते, जागते, वह कार्य में लगा रहता है, तब यदि वह अन्तर्मुखी नहीं होगा तो निश्चित रुप से बहिर्मुखी होगा। उसी को बताने के लिये पतञ्जलि मुनि ने सूत्र बनाया है - वृत्तिसारुप्यमितरत्र चित्त की वृत्तियों का निरोध न करने की दशा में चित्त सांसारिक व्यापार में ही लगा रहता है। वह स्वाभाविक और अनिवार्य है।

योग एक यात्रा है, जो जीवन के प्रयोजन को प्राप्त करने के लिए की जाती है। इस योग को समझने के लिए एक और विधि हो सकती है। संक्षेप में योग क्या है - जैसे एक शब्द में योग को समझाना हो तो कैसे समझा जाये ? एक शब्द में योग को जानना हो तो वह शब्द है- **ईश्वरप्रणिधान**। प्रणिधान शब्द का अर्थ है - **समर्पण**। जब कोई साधक सिद्ध बन जाता है, अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तब वह ईश्वर के प्रति अपना समर्पण कर देता है। जब व्यक्ति में समर्पण आता है, तब उसे अपना कुछ भी पृथक रखने की इच्छा नहीं रहती, सब कुछ उसे उसका ही लगता है, जिसके प्रति वह समर्पित होता है। इसकी व्याख्या करते हुए व्यास जी कहते हैं - ऐसे साधक के कर्मों में - **ईश्वरार्पणं तत्फलसंन्यासो वा,** जैसे वह या तो स्वामी से पूछ कर कार्य करता है, उसके आदेश का पालन करता है और स्वयं कोई कार्य करता है तो उसे स्वामी के अर्पण कर देता है अर्थात् किये हुए कार्य के फल की इच्छा नहीं करता। ईश्वर और उसके मध्य स्वामी-सेवक का सम्बन्ध होता है, जैसे श्रेष्ठ सेवक सदैव स्वामी को प्रसन्न करना चाहता है, सदा स्वामी के हित साधन में तत्पर रहता है, उसी प्रकार उपासक अपने उपास्य को प्रसन्न करने में तत्पर रहता है। स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा करता है, आज्ञा पालन कर प्रसन्न होता है, अपने को धन्य समझता है, कृत-कृत्य मानता है।

ईश्वरप्रणिधान का महत्व समझने के लिए योगदर्शन के सूत्रों पर चिन्तन करना अच्छा रहता है। सूत्रों पर विचार करने से पता लगता है कि योग के अंगों में सबसे महत्वपूर्ण शब्द ईश्वरप्रणिधान है। योग-दर्शन में साधना, समाधि की सिद्धि के बहुत सारे उपायों में पहला मुख्य उपाय बताया है, ईश्वरप्रणिधान। पतञ्जलि ने सूत्र लिखा है- **समाधिसिद्धिरीश्वर-प्रणिधानात्**- **ईश्वरप्रणिधान** से समाधि सिद्ध हो जाती है। व्यास कहते हैं - ईश्वरप्रणिधान से परमेश्वर प्रसन्न होकर तत्काल उसे अपना लेता है।

कुछ विस्तार से योग समझाते हुए योगदर्शन के दूसरे पाद में, जिसे साधन पाद कहा गया है, उसमें क्रिया योग और अष्टांग योग का व्याख्यान किया है। इन दोनों स्थानों पर ईश्वरप्रणिधान का उल्लेख किया गया है। क्रिया योग का पहला सूत्र- **तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः**। तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान क्रिया योग के तीन अंग है। इसी प्रकार अष्टांग योग में सर्वप्रथम यम-नियमों की चर्चा की गई है - यम, नियम, आसन,

प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि। इन आठ अंगों में प्रथम दो हैं - यम और नियम। यम है - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। नियम हैं - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान। इस प्रकार नियमों में अन्तिम है - ईश्वरप्रणिधान। विस्तार से जब योग का कथन किया जाता है तो उसे अष्टांग योग कहते हैं। इसमें भी ईश्वरप्रणिधान है। कुछ कम विस्तार से योग के अंग बतलाये गये हैं - **तपः स्वाध्यायेश्वर प्राणिधानानि क्रियायोगः**। इसमें भी ईश्वरप्रणिधान है तथा समाधि पाद में एक शब्द में जब योग की बात की गई है तो भी कहा गया - समाधिसिद्धिरीश्वर-प्रणिधानात्। अर्थात् एक शब्द में योग ईश्वरप्रणिधान है। यही उपासना है।

उपासना का अर्थ समझने के लिए उपनिषद् में एक सुन्दर दृष्टान्त आया है। वहां कहा गया है - जैसे भूखे बच्चे मां की उपासना करते हैं, उसी प्रकार देवता अग्निहोत्र की उपासना करते हैं। उपासना ऐच्छिक नहीं है, जब इच्छा हुई की, जब इच्छा हुई नहीं की। समय मिला तो कर ली, नहीं समय मिला तो नहीं की। उपासना एक आन्तरिक भूख है, एक आवश्यकता है, जिसे पूरा किये बिना रहा नहीं जा सकता। एक भूख से पीड़ित बालक को माँ की जितनी आवश्यकता लगती है, उतनी ही तीव्र उत्कण्ठा एक उपासक के मन में उपास्य के प्रति होती है। तब उपासना सार्थक होती है। मनुष्य जिससे प्रेम करता है, जिसे चाहता है उसके निकट रहना चाहता है, उसी प्रकार परमेश्वर को उपासक अपने निकट देखना चाहता है। सदा अपने प्रिय की निकटता की इच्छा करना ही उपासना है।

जनसामान्य के मन में उपासना करने को लेकर बहुत संशय रहता है। उपासना कैसे प्रारम्भ की जाये, चित्त की वृत्तियों को कैसे रोका जाये, मन परमेश्वर में कैसे लगे आदि-आदि। जो लोग उपासना के अभ्यासी हैं, उनके अनुभव नवीन साधक के लिये उपयोगी हो सकते हैं। जहां तक मन को एकाग्र करने का प्रश्न है, मन कभी खाली नहीं रहता, उसकी रचना प्रकृति से हुई है, अतः वह स्वाभाविक रुप से सांसारिक विषयों की ओर दौड़ता है। उसे हम रोकना चाहते हैं, वह रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसी परिस्थिति में मन को नियन्त्रित करने का सरल उपाय है - अपने पूर्व कार्यों का चिन्तन करना। इसमें प्रतिदिन प्रातः-सायं अपने दिनभर, रातभर के कार्यों पर विचार करने का विधान तो है, यदि दिन में जब भी खाली समय मिले, अपने पिछले कार्यों के विचार में मन को लगाया जाये, तो मन सरलता से अपने कार्यों पर विचार करने में व्यस्त हो जाता है। आज के, कल के, सप्ताह के या मास के कार्यो पर चिन्तन करते-करते मन अनायास ही उपासक के नियन्त्रण में हो जाता है। मन अपेक्षा करने लगता है कि उसे किसी कार्य में लगाया जाये, उसी समय मन को वांछित कार्य में लगाया जा सकता है। उपासना की सफलता और उपासना में गति लाने के कई सरल नियम हैं, उनमें उपासना के लिए स्थान और समय का निश्चित करना भी आता है। निश्चित स्थान और निश्चित समय उपासक को उपासना के लिये प्रेरित करते हैं। उपासना में बैठने के बाद आसन को सहज भाव से बिना बदले उपासक कितने समय बैठक सकता है, यह महत्वपूर्ण है। वस्तुतः आसन में इन्द्रियों को एकाग्र करने में सबसे सहयोगी क्रिया यही है कि उपासक कितनी देर तक आंखे बन्द करके बैठ सकता है ? इन सामान्य बातों से उपासना में रुचि और गति दोनों बढ़ती है।

अब हमारी समझ में आ सकता है कि योग केवल प्रातःकाल और सायंकाल किया जाने वाला व्यायाम नहीं, अपितु चौबीस घण्टे आनन्द में रमण करने का नाम है। जब हम जागते हुये, प्रातःकाल के समय ब्रह्ममुहूर्त में सन्ध्या करते हैं तब आंख बन्द करके योग करते हैं। सूर्योदय के समय सबके साथ बैठकर घी, सामग्री, समिधा से अग्निहोत्र करते हैं, यह भी उपासना है। अग्निहोत्र के लाभ बतलाते हुए ऋषि दयानन्द कहते हैं - यज्ञ में मन्त्रों के पढ़ने से परमेश्वर की उपासना भी होती है। हम कह सकते हैं - यह आँख खोलकर अग्निहोत्र करना उपासना ही है। इसी प्रकार चौबीस घण्टे के व्यवहार में भी उपासना होनी चाहिए, तब उपासना क्या होगी ? तब उपासना यम-नियम का पालन करना, दुकान करना, खेती करना, मजदूरी करना, नौकरी करना, सब कुछ उपासना होगी। उस समय यम-नियमों का पालन हो रहा होगा। इस प्रकार अकेले उपासना करना

सन्ध्या है, परिवार के साथ उपासना करना अग्निहोत्र है और पूरे दिन सबके साथ, सभी प्रकार का व्यवहार यम-नियम पूर्वक करना सार्वजनिक उपासना है। यही योग है।

सामान्यजन की धारणा रहती है कि मुक्ति तो परमेश्वर की वस्तु है, वह उसकी कृपा व उसकी उपासना से मिलती है। यह बात सब लोग मानते और समझते हैं परन्तु संसार के विषय में ऐसा संसार की वस्तुओं को पाने के लिए हम ईश्वर के विपरीत चलना आवश्यक मानते हैं। जबकि सच तो यह है कि संसार भी उसी ईश्वर का है जिसकी मुक्ति है, फिर जिस योग साधना से ईश्वर मुक्ति देता है, वही ईश्वर योग की साधना करने से संसार के सामान्य सुख से वंचित क्यों रखेगा ? योग संसार से होकर मुक्ति तक जाने का मार्ग है, इसलिए संसार का सुख भी बिना योग के मिलने की कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार संसार योग का विरोधी नहीं, योग की प्रयोगशाला है।

योग जीवन की यात्रा है, इसमें कभी गति तीव्र होती है, कभी मध्यम और कभी मन्द। इतना ही सब उपासना काल के बीच अन्तर है। इसी भाव को कृष्ण जी ने गीता के निम्न श्लोकों में कहा है -

नैव किञ्चित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यञ्श्रृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्॥
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्॥

पता : परोपकारिणी सभा, अजमेर

सत्य-असत्य को जानो

सभी जिज्ञासु मित्र, माताएँ, बहने इस विश्लेषण के द्वारा ही समझ सकते हैं कि यह सब अन्धविश्वास है। मात्र ज्योतिषियों द्वारा अपने ठगी के धन्धे के लिए ही बनाया गया है इसका कोई भी वैज्ञानिक आधार नहीं है। यदि कोई त्रिकालदर्शी, डिग्रीधारी, महाज्ञानी ज्योतिषी इन सिद्धान्तों को सही सिद्ध करना चाहे तो आकर आर्यसमाज में चर्चा कर सकते हैं। आपसे एक छोटा सा अनुरोध है कि यदि आप इन तमाम तरह के अन्धविश्वासों से बचना चाहते हैं, अपनी मेहनत का धन बचाना चाहते हैं, अपने परिवार के साथ सुख समृद्धि से रहना चाहते हैं, अपना अरबों वर्ष पुराना देश और धर्म बचाना चाहते हैं तो आप सच्चे हिन्दू, सनातनी वैदिक धर्मी बनना चाहते हैं तो आइये आर्यसमाज में आपका स्वागत है। यहां ईश्वर की राह में कोई रोड़ा नहीं है। १९ वीं सदी के महान समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने जहां वेद उद्धार कर सत्य की राह दिखाई, वहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर देश, समाज में फैले पाखण्ड, कुरीतियों, भ्रमों, भ्रांतियों व अन्धविश्वास से ग्रस्त देशवासियों की दयनीय दशा को देखा और दृढ़ संकल्प के साथ पाखण्डों का खण्डन करने हेतु एक ज्वलन्त पताका फहराई थी अब हम सब मिलकर एक भय मुक्त अन्धविश्वास रहित राष्ट्र व समाज के निर्माण में आर्यसमाज के माध्यम से सहयोगी बने। आर्यसमाज में आपका स्वागत है।

- सुरेन्द्र कुमार रैली, अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति

मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं, किन्तु एक बड़ी खाई है। - महर्षि दयानन्द सरस्वती

पाखण्ड और अंधविश्वास से मुक्ति पाएँ, आर्यसमाज को अपनाएँ.

“वेद” मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है

- ओमप्रकाश आर्य

उपादेयात्मक

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर,
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्,
निर्मित सबकी तिल सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम ।
क्या कमी तुम्हें है त्रिभुवन में
यदि बने रह सको तुम मानव ।।

मनुष्य इस सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। संसार में एक से एक सुन्दर फूल और एक से एक सुन्दर पक्षी मिलेंगे, पर मानव उनमें सबसे सुन्दर है। यदि वह मनुष्य बनकर रहे तो उसे इस धरती पर किसी चीज की कमी नहीं होगी।

इसी सुन्दर रचना मानव, अपने को विभेद के जाल में फंसाकर एक-दूसरे का रक्त-पिपासु बन रहा है। वह अपने को एक-दूसरे से अलग-अलग मानता है। यही अलगाववृत्ति विभिन्न समस्याओं का कारण है। आखिर इसके पीछे क्या कारण है ? इन सबके पीछे जो मुख्य कारण है, वह है-धर्म। धर्म को लेकर अनेक सम्प्रदाय मत-मतान्तर आदि फैले हुए हैं। क्या सबका धर्म अलग-अलग हो सकता है ? नहीं। मानव का धर्म अलग-अलग नहीं हो सकता। मानव का धर्म एक है। वह है मानवीय गुण। यदि हमारे अन्दर मानवीय गुण है तो हम धार्मिक है और मानव है, क्योंकि धर्म का शाब्दिक अर्थ है जो धारण करने के योग्य हो। अर्थात् वह गुण जो मानव को धारण करने के योग्य हो। इसी को और प्रकाशित करते हुये मनु महाराज लिखते है -

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, अन्दर-बाहर की पवित्रता, इन्द्रियों के ऊपर नियंत्रण, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना - ये दस धर्म

के लक्षण हैं। इन्हें धारण करने वाला मनुष्य धार्मिक कहलाता है। जिनके अन्दर ये गुण नहीं होते वह धार्मिक नहीं कहा जा सकता। इन गुणों को कोई भी हो या कोई भाषा बोलता हो, कैसी भी वेशभूषा धारण करता हो। ये गुण मानवमात्र को धारण करने योग्य है। इन गुणों को धारण करते ही मानव के अन्दर से घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, हिंसाभाव, कटुता, अलगाव, वैमनस्य आदि सारी बुराईयां स्वतः दूर होती चली जाएंगी। आन्तरिक सद्भावना के लिए यह सर्वोत्तम बूटी है। इसी बूटी का सेवनकर मनुष्य मनुष्य से प्रेम कर सकता है और हृदय की कटुता को समाप्त कर सकता है। इन्हें धारण करके ही मनुष्य एक दूसरे को सुख-दुःख में सहभागी हो सकता है। प्रत्येक मानव को इन गुणों को धारण करना चाहिए तभी वह धार्मिक और मानव कहलाने का अधिकारी हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती **‘स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश’** नामक पुस्तक में लिखते हैं - **“मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों को सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे।”** अर्थात् मनुष्य मननशील होता है, वह दूसरों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझता है, दूसरों के हानि-लाभ को अपना हानि-लाभ समझता है। यदि हम अपने को मनुष्य कहते है और अपने को धार्मिक मानते हैं तो हमें मननशील होना है, मानव को मानव के निकट ला सकती है। आज धर्म के नाम पर बवंडर खड़ा हो जाता है। पर धर्म तो उस बवंडर से बहुत दूर है। धर्म झगड़ा-फसाद नहीं कराता। धर्म तो मनुष्य को सुन्दर आचरण प्रदान करता है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं - “जो पक्षपातरहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त, ईश्वराज्ञा, वेदों से अविरुद्ध है उसको

धर्म मानता हूँ।" वास्तव में धर्म और कोई बाहरी आडम्बर नहीं है, धर्म कोई बाहरी वस्तु नहीं है, धर्म तो सत्ययुक्त आचरण को कहते हैं, धर्म तो सत्य बोलने को कहते हैं, धर्म तो न्याय करने को कहते हैं। ये समस्त गुण मानव के अन्दर होने चाहिए, तभी वह अपने को धार्मिक कह सकता है। इन गुणों को धारण करते ही मानव मानव बन जाएगा और वह सबसे प्रेम करने लगेगा, वह समस्त संकीर्णताओं से ऊपर उठ जाएगा।

वेद कहता है- मनुर्भव। अर्थात् मनुष्य बनो। वेद किसी को हिन्दू, किसी को मुसलमान, किसी को सिख, किसी को ईसाई बनने का आदेश नहीं देता। वेद तो प्रत्येक मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश देता है। मनुष्य बनने से इस धरती पर से सारी समस्याएं समाप्त हो जाएगी। आज के युग की सबसे बड़ी मांग और आवश्यकता है - मनुष्य बनने की। विज्ञान की सारी प्रगति अधूरी है यदि मनुष्य मनुष्य नहीं बनेगा। मनुष्यता में कोई जाति नहीं होती, मनुष्यता में कोई सम्प्रदाय नहीं होता, मनुष्यता में कोई मजहब नहीं होता। मनुष्यता में तो मानव के दैवीय गुण होते हैं। जिन गुणों के कारण वह महकता है, लिखा है -

महक फूलों में ही नहीं होती, इंसान भी महकते हैं,
चमक आग और बिजली में ही नहीं होती
इंसान भी चमकते हैं।
धरती की धूल धन्य हो जाती है
जब इंसान इंसान बनकर रहते हैं॥

आखिर इंसान महकेगा कैसे ? उसके महकने के लिए कौन से आन्तरिक गुण होने चाहिए ? वे आन्तरिक गुण है - दया, क्षमा, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, सहयोग, मैत्री, उदारता, परोपकार, सेवा, अहिंसा आदि। इन गुणों को अपनाते ही मनुष्य महकने लगता है। इन गुणों को अपनाते ही मनुष्य महकने लगता है। ये ही गुण मानव के अन्दर सौहार्द्र पैदा कर सकते हैं, इन्हीं से सद्भाव स्थापित हो सकता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का भाव इन्हीं गुणों से दूर हो सकता है। हमें विचार करके इन गुणों को अपने अन्दर धारण करने चाहिए। तभी हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती - **"आर्योद्देश्यरत्नमाला"** नामक पुस्तक में लिखते हैं - **"मनुष्य अर्थात् जो विचार के बिना किसी काम को न करे उसका नाम मनुष्य है।"** इस प्रकार मनुष्य उसे कहते हैं जो विचार करके प्रत्येक कार्य को करता है। बिना विचारे काम करने से अनेक समस्यायें उठ खड़ी होती हैं। मनुष्य को भगवान ने मननशील बनाया है, अतः हमें मननशील होना चाहिए। हमें मानव की झूठी जातियों में विश्वास नहीं करना चाहिए। मानव की जाति अलग नहीं हो सकती। मानव की जाति मानव की जाति है। जैसे - घोड़ा, बैल, हाथी, भेड़, बकरी आदि की जाति अलग-अलग होती है, उसी प्रकार मनुष्य की एक ही जाति होती है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक बनी रहती है। घोड़ा जीवनभर घोड़ा रहता है, बैल जीवन भर बैल रहता है, हाथी जीवनभर हाथी रहता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जीवनभर मनुष्य जाति के रुप में रहता है। वह न हिन्दू है, न मुस्लिम है, न सिख है, न ईसाई। वह है तो केवल मनुष्य जाति का है। फिर हम मानव परस्पर क्यों अपने को अलग- अलग मानकर चलते हैं। हमारे कर्म अलग-अलग हो सकते है, हमारे पहनावे अलग-अलग हो सकते हैं। हमारी बोली भाषा अलग-अलग हो सकती है, पर हमारी मनुष्य की जाति अलग-अलग नहीं हो सकती। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। हमें चिन्तन करना होगा। हमें मानवीय गुणों को अपने अन्दर धारण करने होंगे, तभी हमारे जीवन में सुख-शांति, आनन्द, अमन-चैन आ सकेगा। उपनिषद कहती है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचत् जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात् यह संसार ही प्रभुमय है। प्रभु सबमें समाया हुआ है। जो कुछ हम देख रहे हैं सबमें परमात्मा व्याप्त है, इस लिए त्यागपूर्वक धन का उपभोग करो। किसी के धन की लालसा मत करो। जब सबमें प्रभु समाया है तो फिर हम उसी एक परमपिता की सन्तान हुए। जब हम एक परमपिता की सन्तान हैं, तो हम सब अलग-अलग कैसे ? वास्तव में हम अलग-अलग हैं ही नहीं। हम सब मानव एक हैं। केवल हमारे कर्म अलग-अलग हो सकते हैं। वेद कहता है -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहूराजन्य कृतः ।
उरु यदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥

अर्थात् शिक्षा देने वाला इंसान ब्राह्मण पदवी को धारण करता है, रक्षा करने वाला क्षत्रिय पदवी को धारण करता है। पालन-पोषण करने वाला वैश्य पदवी को और सेवा करने वाला शूद्र पदवी को धारण करता है। ये चारों उपाधियां हैं ये जाति नहीं है। इन उपाधियों को कोई भी कर्मानुसार धारण कर सकता है। जब ये कर्मानुसार उपाधियां है फिर हम अपने को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई क्यों कहते हैं ? अपने को अलग क्यों मानते हैं ? परमपिता परमात्मा ने सबको समान बनाया है। वह हमारे चिन्तन और कर्म के ऊपर है कि हम अपने को कहां तक उसके गुणों को धारण कर सकते हैं। आज यदि किसी चीज की कमी है तो बस प्रेम की। मानव मानव से प्रेम करें, बस सारी अशान्ति, भीति दूर हो जाएगी। अतः हम सबको चाहिए कि हम मानव बनें, केवल मानव। मानव के गुणों को धारण करें। इस स्वर्गिक धरती का सम्राट बनें और सुख-शांति-आनन्द को प्राप्त करें।

- पता आर्यसमाज रावतभाठा, वाया-कोटा
(राजस्थान) ३२३३००७

कविता

"दीपावली"

- खुशहाल चन्द्र आर्य

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्यौहार ।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड, जिनका नहीं है कोई आधार ॥
दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्यौहार ।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यही है "गीता" का सार ॥
दीपावली है अधर्म पर, धर्म की विजय का त्यौहार ।
अन्य मतो को छोड़, वैदिक धर्म अपनाओं जो देता है आत्मा को आहार ॥
दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्यौहार ।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो सभी से ईमानदारी का व्यवहार ॥
दीपावली है कूड़ा-कर्कट पर, सफाई की विजय का त्यौहार ।
कूड़े-कर्कट से करो सदा नफरत और सफाई से करो हमेशा प्यार ॥
दीपावली है हंसो और हंसाओ और, सबको प्रसन्न रखने का त्यौहार ।
सबसे रखो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार ॥
अधिकतर लोग समझते है, इसे रावण पर राम की विजय का त्यौहार ।
जो भी हो, इससे सीखें, कैसे आवें मेरे जीवन में राम के संस्कार ॥
दीपावली का त्यौहार हमें सिखाता है, सबसे करना प्यार ।
न कभी किसी पर जुल्म करो, न करो किसी से गलत व्यवहार ॥
यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सबसे सद् व्यवहार ।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया हमने सही अर्थों में दीपावली का त्यौहार ॥
दीपावली है बुराईयों को छोड़, अच्छाईयों को अपनाने का त्यौहार ।
कहता है "खुशहाल" इस सिद्धान्त को लो अपने जीवन में उतार ॥

पता - गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता-७००००७

निर्वाण दिवस पर विशेष

– स्व.आचार्य भद्रसेन

महर्षि के विचार दीपों की अमरज्योति

भारतीय परम्परा में अधिकतर महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषों की मृत्यु किसी विशेष घटना के रूप में घटित हुई है, उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूर्वक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, वह अपने पीछे एक विशेष पृष्ठभूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि अन्तिम दिनों में महर्षि के सारे शरीर पर फफोले पड़ गये थे और उन्हें बहुत बड़ी संख्या में दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उलटा बढ़ा था। उन दिनों की सारी घटनाएँ महर्षि की मृत्यु को एक योजनाबद्ध षड़यंत्र सिद्ध करती है। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था, तो मार्ग में एक डाक्टर (लक्ष्मण) अकस्मात् मिला, पता लगने पर उसने इलाज किया, जिससे कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रहकर उपचार करना चाहा, पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्यागपत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों जिस प्रकार रियासतों के राजाओं को प्रभावित करना प्रारम्भ किया था और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का जिस प्रकार से अमिट प्रभाव पड़ रहा था, इसी के परिणामस्वरूप नवजागृति के साथ भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास प्रारम्भ हो गया था। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नहीं सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा गया, जो कि उनके निधन का कारण बना। अतः महर्षि की मृत्यु की घटना शहीदी पर्व की तरह अविस्मरणीय है। महर्षि के मृत्युकाल का वह घटना-चक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है। क्योंकि उसको देखने वाले साधारणजन ही नहीं अपितु बड़े-बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इसे सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बनकर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन, विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि ने एक वैचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त, तर्कसंगत ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्रों से प्रमाणित भी थे। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्रों वर्षों से विद्यमान थी, परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरुप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणामस्वरुप एक ईश्वर के स्थान पर

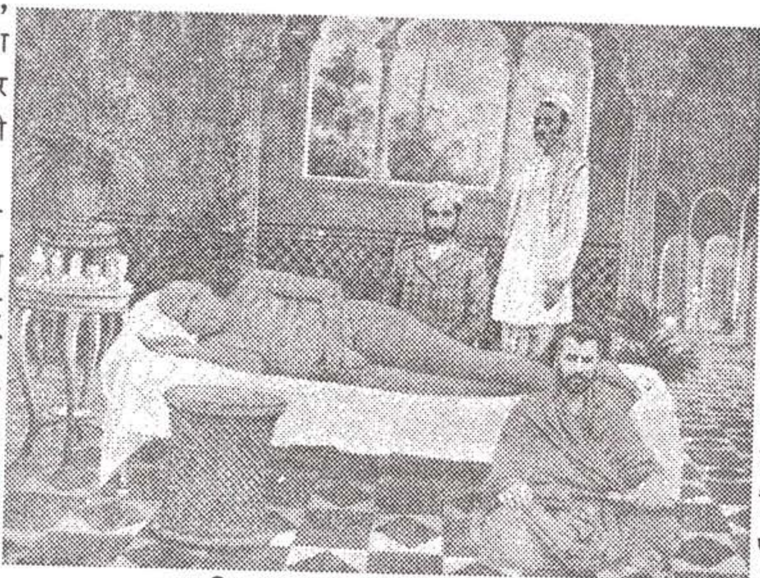

हृदय विदारक – महर्षि का अन्तिम प्रयाण दृश्य

जब दुनिया रो पड़ी

एकदम लम्बा सांस लिया, फिर उसे वेग से छोड़ दिया।
इस नश्वर शरीर से तभी, आत्मा ने सम्बन्ध तोड़ लिया॥
सायंकाल छः बजे दीवाली की करोड़ों दिये जले।
तीन अक्टूबर अट्ठारह सौ तिरासी को ऋषि परलोक चले॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जग में सुखों के दाता थे।
बहुत बड़ा स्वाध्याय था उनका सब वेदों के ज्ञाता थे॥
महिलाओं और दलित जनों का बहुत बड़ा उद्धार किया।
आर्यसमाज के द्वारा उन्होंने दुनिया का उपकार किया॥

पाखण्डों से ऋषि दयानन्द ने जो अविराम युद्ध किया।
सही मार्ग दिखला करके भूले भटकों को शुद्ध किया॥
ब्रह्मचारी विद्वान थे और वह सत्यधर्म प्रचारक थे।
जात पात नहीं मानते थे निराकार के उपासक थे॥

उनके जीवन दर्शन से यह मेरी समझ में आया है।
स्वामी जी ने निश्चित ही मोक्षधाम पद पाया है॥
अपने सतत प्रयत्नों से प्राणी मात्र का कल्याण किया।
बड़ी अभागी रात थी वह उन्होंने जब प्रस्थान किया॥

महाकाव्य - दयानन्द गौरवगाथा (लेखक : अभयराम शर्मा 'दयानन्दी')

अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना ऊँचा-नीचापन, सामाजिक, छूआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताएँ भारतीयों में प्रचलित हो गयी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों से ही उपर्युक्त रूढ़ियों का निराकरण करके जीवन का एक तर्कसंगत, जीवन्त, व्यावहारिक रूप उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की अपेक्षा हिन्दी भाषा जानने वालों के लिए महर्षि के अपने वाक्य अपने आप में स्वयं परम प्रमाण है। इन वाक्यों की विद्यमानता में यही कहना अधिक संगत है, कि हाथ कंगन को आरसी क्या और महर्षि के इन वाक्यों की उपस्थिति में उस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाना या मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली ही बात होगी। जीवन के विभिन्न व्यवहारों के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन करने वाले थे।

महर्षि के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की तड़प उदीप्त हो चुकी थी, अतः विद्याध्ययन के कार्यक्रम को निरस्त करके नर्मदा तट संगठन के कार्य में तल्लीन हो गये। और स्वामी दयानन्द सम्वत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा पहुंचे तथा तीन वर्ष तक विद्याध्ययन करके गुरुदक्षिणा में जीवनदानी बनकर चल पड़े। पहले शैव मतावलम्बी बन वैष्णव मत का खण्डन करते रहे तथा इसके पश्चात् शैवमत का भी खण्डन आरम्भ कर दिया। यह परिवर्तन उनके निरन्तर चिन्तन एवं स्वाध्याय का परिणाम था।

दयानन्द यदि चाहते तो समाज से दूरस्थ जंगलों में जाकर घोर तपस्या से मुक्ति को प्राप्त कर लेते, किन्तु देश और समाज की मुक्ति के समक्ष आत्म-मुक्ति की बात उनके लिये बहुत ही छोटी पड़ गयी थी। यही कारण था कि उनका स्वतन्त्र चिन्तन राष्ट्रीय मानस में नवीन प्राण फूंकने का मार्ग खोज रहा था। अपने मार्गानुसन्धान के कार्यकाल में वे यदा-कदा गुरुवर विरजानन्द जी से अवश्य मिल लेते थे। वे निरन्तर जन-कल्याण के कार्य में लगे रहे। देशाटन करते हुए वे अपने क्रान्तिकारी विचारों से देश की जनता को अवगत कराते रहे। अन्ततः सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की और "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" का सूत्र प्रचारित किया। उनके मन में आजादी की तड़प इतनी थी कि उनके ग्रन्थों में स्थान-स्थान में उसका उद्घाटन होता है। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार उनके ग्रन्थों के माध्यम से हमें परस्पर प्रेम तथा स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते रहें। कार्तिक की अमावस्या को महर्षि का महाप्रयाण हुआ और जाते जाते असंख्य वैदिक धर्मियों का दीप प्रज्वलित कर गये। आओ, ऋषि का दीप बनकर उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्रकाश फैलाएं।

'महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज मुझे क्यों प्रिय हैं'

- मनमोहन कुमार आर्य

वैयक्तिक

सृष्टि के आरम्भ से लेकर अद्यावधि संसार में अनेक महापुरुष हुए हैं। उनमें से अनेकों ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं या फिर उनके शिष्यों ने उनकी शिक्षाओं का संग्रह कर उसे ग्रन्थ के रुप में संकलित किया है। हम उत्तम महान पुरुष को प्राप्त करने के लिए निकले तो हमें आदर्श महापुरुष के रुप में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रतीत हुए। हमने उन्हें अपने जीवन में सर्वोत्तम आदर्श महापुरुष के रुप में स्वीकार किया है। ऐसा नहीं कि उनसे पूर्व उनके समान व उनसे उत्कृष्ट पुरुष या महापुरुष, महर्षि, ऋषि, योगी आदि उत्पन्न ही नहीं हुए। हमारा कहना मात्र यह है कि हमारे सम्मुख जिन महापुरुषों के विस्तृत जीवन चरित्र उपलब्ध है, उनमें से हमने महर्षि दयानन्द को अपने जीवन का सत्य, यथार्थ व आदर्श पथ प्रदर्शक पाया है। न केवल हमारे अपितु वह विश्व के सभी मनुष्यों के सच्चे हितैषी, विश्वगुरु व पथप्रदर्शक रहे हैं व अपने ग्रन्थों व कार्यों के कारण अब भी हैं। विश्व के लोगों अपने अज्ञानता व कुछ निजी कारणों से उनका उचित मूल्यांकन नहीं किया। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त हम अन्य महापुरुषों यथा श्रीरामचन्द्र जी, योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी, आचार्य चाणक्य, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बैरागी और सभी आर्य विद्वानों व प्रचारकों को भी अपना आदर्श मानते हैं।

संसार में सृष्टि के आरम्भ से अद्यावधि अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है। गणनातीत ग्रन्थों में एक ग्रन्थ वेद भी है जिसके बारे में हमें महर्षि दयानन्द जी से पता चला कि वह मनुष्यों व ऋषियों की रचना नहीं अपितु ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में चार सर्वाधिक पवित्र ऋषि आत्माओं अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को संसार के तत्कालीन व भावी मनुष्यों के कल्याण व उद्धार के लिए ईश्वर ने अपने अन्तर्यामी स्वरुप से दिया था। उस ज्ञान को ही स्मरण कर व अन्यों में प्रचार कर इन चार ऋषियों व इनसे पढ़कर ब्रह्माजी ने प्रथम वेदों का प्रचार व प्रसार किया था और तब जो परम्परा आरम्भ हुई थी, उसका ही निर्वहन महर्षि दयानन्द ने ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया। महर्षि दयानन्द के आर्विभाव से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध महायुद्ध हो चुका था। इसके परिणामस्वरुप विश्व की अपने समय की एकमात्र सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की कालान्तर में अप्रत्याशित अवनति हुई थी। वेद विलुप्ति के कगार पर थे। वेदों के सत्य अर्थ तो प्रायः विलुप्त ही हो चुके थे तथा उनके स्थान पर कपोल कल्पित भ्रान्त अर्थ प्रचलित थे। वैदिक धर्म व संस्कृति में भी अनेक विकार आकर यह अन्धविश्वासों, कुरीतियो, पाखण्डों व सामाजिक असमानताओं सहित शिक्षा व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में बहुत अधिक अवनत अवस्था में आ गई थी। यही कारण था देश देश से बाहर अनेक अवैदिक मतों का प्रादुर्भाव हो चुका था। सभी मत सत्य व असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों से युक्त थे।

इन मतों के कारण लोग परस्पर मित्र भाव न रखकर एक दूसरे के प्रति शत्रु भाव ही प्रायः रखते थे। दिन प्रतिदिन इसमें वृद्धि हो रही थी। ऐसा कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं हुआ था जो इनमें एकता के सूत्र की तलाश करता और उसका प्रस्ताव कर अपने मिथ्या विश्वासों और मान्यताओं को छोड़कर सत्य का ग्रहण करने व असत्य का त्याग करने का आह्वान करता। यह काम महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने अपने समय में अपनी पूरी शक्ति व प्राणों की

बाजी लगाकर किया जिसका परिणाम आज का पूर्व की तुलना में अधिक उन्नत विश्व कहा जा सकता है जिसमें अनेक अन्धविश्वास कम व दूर हुए हैं, सामाजिक कुरीतियां व विषमताओं कम व दूर हुई है और ज्ञान-विज्ञान, देश-विदेश में नित्य नई ऊंचाईयों को छू रहा है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व संकल्प, इच्छा शक्ति, वेद ज्ञान, साहस, वीरता, देश प्रेम, प्राणीमात्र के हित को सम्मुख रखकर विश्व कल्याण के लिए वेदों की ओर लौटो का सन्देश दिया। उन्होंने बताया कि वेद ईश्वर प्रदत्त सत्य व प्रमाणिक ज्ञान है। उनकी मान्यता था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ, बुद्धिमान, ईश्वर को मानने वाले सच्चे व निष्पक्ष लोगों का परम कर्त्तव्य व धर्म है। वेदों की सत्यता और प्रमाणिकता के साथ ही वेदों की प्रासंगिकता और सर्वांगपूर्ण धर्म की पुस्तक होने के प्रबल समर्थन उन्होंने युक्ति व तर्कों सहित अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि उनके अनेक ग्रन्थ हैं जो सत्यार्थ प्रकाश की मान्यताओं व सिद्धान्तों के पूरक हैं। उनके साहित्य से सिद्ध होता है कि वेद पूर्णरुपेण सर्वांगपूर्ण धर्म ग्रन्थ है। धर्म की जिज्ञासा के लिए अन्य किसी ग्रन्थ की मनुष्यों को अपेक्षा नहीं है क्योंकि वेद ईश्वरीय सत्य वाक् होने से स्वतः प्रमाण और संसार के अन्य सभी ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। अर्थात् सत्य व प्रमाणिकता में वेदों के समान संसार का अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। हाँ, भाषा आदि के ज्ञान की दृष्टि से वेदों के संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य-अन्य भाषाओं में भाष्य व टीकाओं की सहायता ली जा सकती है। सत्यार्थ प्रकाश को भी हम संसार के सभी मनुष्यों का एक आदर्श धर्म ग्रन्थ कह सकते हैं, जिसमें वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए मनुष्यों के मुख्य-मुख्य कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालने के साथ अकर्त्तव्य, अन्धविश्वासों व मिथ्या मान्यताओं का परिचय देकर उनका त्याग करने की प्रेरणा भी दी गई है। सत्यार्थ प्रकाश में ऐसा क्या है जो हमें सर्वाधिक प्रिय है ? इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश का आरम्भ महर्षि दयानन्द ने विस्तृत भूमिका लिख कर दिया है। इससे महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश की रचना करने का उद्देश्य तथा पुस्तक में सम्मिलित किये गये विषयों का ज्ञान होता है। वह लिखते हैं कि उनका इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य और जो प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान, आप्तो (धर्म विशेषज्ञों) का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरुप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे। महर्षि दयानन्द ने भूमिका में इन वाक्यों में जो कुछ कहा है, उसका उन्होंने पूरो सत्यार्थ प्रकाश में पूरी निष्ठा से पालन किया है। हम समझते हैं कि इस प्रयोजन व उद्देश्य से शायद ही कोई धर्म ग्रन्थ लिखा गया हो और यदि लिखा भी गया है तो सम्प्रति उनमें अनेक अशुद्धियां व असत्य मान्यतायें, अन्य मतों के प्रति विरोध व शत्रुता का भाव, छल, कपट, लोभ व बल पूर्वक उनका धर्मान्तरण करने का विचार व अनुमति जैसे अमानवीय विचार विद्यमान है, जिससे संसार में अशान्ति उत्पन्न हुई है।

सत्यार्थ प्रकाश के पहले समुल्लास में हम ईश्वर के मुख्य निज नाम सहित उसके स्वरुप व १०० से कुछ अधिक नामों व उन नामों के तात्पर्य के बारे में सविस्तार जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे वेदों में अनेक ईश्वर व देवता होने की बात निरर्थक व असत्य सिद्ध होती है तथा यह विदित होता है कि एक ही ईश्वर के असंख्य गुण-कर्म-स्वभाव व सम्बन्धों के कारण उसके अनेक नाम हैं। इस अध्याय को समझ लेने पर जहां ईश्वर का सत्य स्वरुप

जानकर आत्मा की तृप्ति होती है वहीं ईश्वर के स्वरुप, नाम व कार्यों के विषय में भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में जो मिथ्या व अन्धविश्वासयुक्त कथन है, उसका भी निराकरण हो जाता है। दूसरे अध्याय में माता-पिता व आचार्यों द्वारा कैसी शिक्षा दी जाये इसका ज्ञान कराया गया है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण व मनुष्य व समाज के धारण व व्यवहार करने योग्य है। तीसरा समुल्लास पढ़कर ब्रह्मचर्य का महत्व व उससे लाभ, पठन, पाठन वा अध्ययन-अध्यापन सहित सत्य व असत्य ग्रन्थों का भी परिचय मिलता है और पढ़ने वा पढ़ाने की रीति का भी ज्ञान होता है। सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में युवावस्था में विवाह और गृहस्थ आश्रम के सद् व्यवहारों की शिक्षा दी गई है। पांचवा अध्याय गृहस्थाश्रम का निर्वाह कर इसके कर्त्तव्यों व दायित्वों से मुक्त होकर वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में प्रवेश व उसके महत्व व विधान को विस्तार से समझाया गया है। इस विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ का छठा अध्याय प्रजा व राजधर्म विषय पर है जिसमें वेद व मुख्यतः मनुस्मृति के आधार पर शासन व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है जिसे पढ़कर अनेक बातों में यह वर्तमान की व्यवस्था से भी श्रेष्ठ प्रतीत होती है। सातवां समुल्लास ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद और ईश्वर के स्वरुप के बारे में वेद, युक्ति तर्क तथ ज्ञान-विज्ञान से पुष्ट ईश्वर के स्वरुप पर प्रकाश डाल कर श्रोता की इस विषय में पूर्ण सन्तुष्टि कराता है, जिससे संसार के अन्य एतसम्बन्धी ग्रनथ निरर्थक से प्रतीत होते हैं। आठवां समुल्लास वैदिक सृष्टि विज्ञान से संबंधित है जिसमें जगत की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय पर ज्ञान व विज्ञान से परिपूर्ण प्रकाश डाला गया है। यह ज्ञान संसार के अन्य सभी धर्म ग्रन्थों में प्रायः नदारद है, जिसमें उनकी न्यूनता व अपूर्णता प्रकट होती है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के नवम समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्धन तथा मोक्ष, जन्म, मृत्यु, लोक व परलोक की ज्ञान से पूर्ण व्यवस्था प्रश्नोत्तर शैली में कर वैदिक ज्ञान का संसार से लोहा मनवाया गया है। दसवें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य आदि अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। ग्यारहवां समुल्लास भारतवर्षीय नाना मत-मतान्तरों की अज्ञानपूर्ण मान्यताओं का परिचय कराता है और साथ ही उनका युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया गया है। जिसका उद्देश्य सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग करना मात्र है। बारहवें, तेरहवें व चौदहवें समुल्लास में क्रमशः चारवाक्-बौद्ध-जैन, ईसाई व मुस्लिम मत का विषय प्रस्तुत कर सत्य के ग्रहणार्थ उनकी कुछ मान्यताओं का परिचय दिया गया है। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करने पर मनुष्य को अपने कर्त्तव्य व धर्म को पूर्ण बोध होने के साथ अन्य मतों का परिचय भी मिलता है। सत्यार्थ प्रकाश के अनुरुप अन्य कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। इससे सत्य धर्म का निर्णय करने व उसका पालन करने का ज्ञात होता है, जिससे मानव जीवन सफल होता है। सत्यार्थ प्रकाश वेदों पर आधारित ग्रन्थ हैं, इसमें दी गई मान्यतायें सार्वभौमिक है और विश्वस्तर पर इनका पालन होने से अशान्ति दूर होकर विश्व में शान्ति की स्थापना की पूर्ण सम्भावना परिलक्षित होती है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मनुष्य सत्य विधि से ईश्वरोपासना करने वाला भक्त, वायु-जल-पर्यावरण का शुद्धिकर्ता, माता-पिता-आचार्य-विद्वानों-सच्चे-सन्यासियों की सेवा करने वाला, देशभक्त, समाजसेवी, ज्ञान-विज्ञान का पोषक व धारणकर्ता, स्त्रियों को आदर व सम्मान देने वाला तथा वैदिक गुणों से धारित स्त्रियों को माता के समान मानकर उनका सम्मान करने वाला आदि अनेकानेक गुणों वाला मनुष्य निर्मित होता है। यह कार्य सत्यार्थ प्रकाश व वेद करते हैं जो अन्य किसी प्रकार से नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश का उद्देश्य किसी मत-मतान्तर का विरोध न कर केवल सत्य को प्रस्तुत करना व उसका पालन करने के लिये लोगों को प्रेरित करना है, यही सब ग्रन्थ की संसार के अन्य सभी ग्रन्थों से विष्टिता है। हम सत्यार्थ प्रकाश को देवता कोटि के मनुष्यों द्वारा रचित ग्रन्थों में सर्वोत्तम ग्रन्थ पाते हैं, इसलिये हमें यह ग्रन्थ सर्वाधिक प्रिय है। इसके लेखक महर्षि दयानन्द में आदर्श महापुरुष के सभी दिव्य गुण व क्रियायें विद्यमान होने व उन्होने समाज, देश व विश्व की उन्नति के लिए जो अवदान वा योगदान दिया है, इस कारण उन्हें सर्वोत्तम आदर्श महापुरुष मानते हैं।

महर्षि दयानन्द ने वैदिक विचारधारा, मान्यताओं

व सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के लिए १० अप्रैल १८७५ को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज ने वेदों के प्रचार प्रसार, कुरीति उन्मूलन, सामाजिक विषमता दूर कर समसरता स्थापित करने सहित देश को स्वतन्त्र कराने में प्रमुख भूमिका अदा की है। सम्प्रति समय के साथ कुछ शिथिलतायें भी संगठन में आई हैं जिसको दूर करना नितान्त आवश्यक है जिससे कि प्रभावशाली तरीके से वेदों का प्रचार प्रसार हो और संगठन सुदृढ़ एवं आदर्श बने। महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूर्ण अहिंसात्मक संगठन है और प्रेम व सद्भावपूर्वक ज्ञान का प्रचार करता है। इसके मूल में अपनी संख्या बढ़ाने हेतु हिंसा, लोभ, लालच, छल व प्रपंच वर्जित है। यह प्राणी मात्र के प्रति दया रखता है। कोई भी सच्चा आर्यसमाजी मांसाहार व मदिरापान, अण्डे व अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करता। आर्यसमाज व वैदिक धर्म के दरवाजे सभी मतों के अनुयायियों के लिये खुले हैं। कोई भी यहां आकर सदाचरण कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिए साधना कर सफलता प्राप्त कर सकता है। आर्यशमाज ने दलितों सहित सभी वर्णों के बन्धुओं वैदिक विद्वान् बनाने के साथ पुरोहित बनाया है और सभी स्त्रियों को वेद विदुषी भी बनाया है। अनेक कार्यों में यह भी उसका अभूतपूर्व कार्य है। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि विश्व भर में चर्चित योग वेदों की ही देन है। महर्षि पतञ्जलि के योग दर्शन का आधार वेद ही हैं। संसार का कोई मनुष्य यह नहीं कह सकता है कि वह योग को स्वीकार नहीं करता। सबके जीवन में कहीं अधिक व कहीं कुछ कम योग समाया हुआ है। किसी न किसी रुप में आसान, व्यायाम व प्राणायाम सभी करते हैं। योग के दो अंग यम व नियम तथा इनके उपांग अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान को भी प्रायः संसार के सभी लोग मानते व इन पर आचरण करते हैं।

अतः हमारा मानना है कि संसार के सभी मतों के लोग आंशिक रुप से योग करते हैं। जो योग से परहेज करते हैं उन्हें योग को पूर्णतया अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। इसमें उन्हीं का लाभ व कल्याण है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि हम आज जो कुछ हैं, उसमें महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेख विस्तृत हो गया है अतः इन्हीं शब्दों के साथ हम लेखनी को विराम देते हैं और सभी पाठकों से आग्रह करते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश का जीवन में बार-बार पाठ करें। इससे आपको वह मिलेगा जो संसार के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करने से नहीं मिल सकता।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़े

*महापुरुषों के वाक्यों को पढ़ते समय उनके व्यक्तित्व की गरिमा भी आपको प्रभावित करती है, जिससे अचेतन मन वैसा करने या न करने को विवश हो जाता है। इस प्रकार की बेबसी की स्थिति व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करती है, क्योंकि तब आपके मन के पास मनमानी करने का न तो अवसर होता है न ही सामर्थ्य। अनुभव में एक बात और आई है कि कभी-कभी आपकी ऐसी शंका का समाधान एक छोटा-सा वाक्य कर जाता है, जिसके लिए आप लम्बे समय से भटक रहे होते हैं। **"देखन में छोटे लागे, घाव करे गंभीर"** वाली इन वाक्यों के साथ लागू होती है। बातचीत करते समय, भाषण देते समय, बहस करते वक्त या लिखते समय जब आप इन वाक्यों द्वारा अपने कथन की पुष्टि करते हैं तो आपकी बात में वजन आ जाता है। आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में इससे सहायता मिलती है। **सुनने-पढ़ने वाले कुएं का मेढक** नहीं समझते। वैदिक ज्ञान के बिना संसार का और अपने आपका वास्तविक ज्ञान संभव नहीं है। कोई कितना भी पलायन करे किन्तु एक दिन वैदिक ज्ञान का शरण लेना ही पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे ऋषि हुये जिन्होंने वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हुए वेदों को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म बताया है। **रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारी, जहां काम आवे सुई कहा करे तरवारी,** की उक्ति को चिंतन करने से दोनों की उपादेयता समय और स्थान से सिद्ध होती है।*

महर्षि दयानन्द ही क्यों ?

सन्देशात्मक

- डॉ. अजय आर्य

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ इस धरा पर हुए। उनका हृदय करुणा और मानव मात्र के प्रति प्रेम से भरा हुआ था। वे भ्रमण करने निकले। समाज की अच्छाई और बुराई पर विचार करते थे। वे जिधर जाते उन्हें हिंसा का अराजक वातावरण दिखाई देता था। हिंसा का तांडव हो रहा था। हजारों लाखों पशुओं की बलि चढ़ाई जा रही थी। धर्म के नाम पर हजारों मूक पशुओं की निर्मम हत्या की जा रही थी। इन हत्याओं को धर्म के ताने बाने में लपेटा जा रहा था। मंदिरों तथा उपासना के पवित्र स्थान रक्तरंजित हो रहे थे। कोई आवाज नहीं उठाता था। सब चुप बैठे थे। सिद्धार्थ साहसी था। तार्किकता और मानवीय संवेदना से भरा चित्त उसे चैन से सोने न देता था। अजीब सी बेचैनी उसे परेशान करती थी। उससे रहा न गया। उसने सवाल करने का निर्णय लिया। उसने समाज से पूछा, समाज के तथाकथित कर्णधारी से पूछा, धर्मध्वजी ब्राह्मणों से पूछा। इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है ? उसने एक ही स्वर में जवाब वेद में लिखा है। यह वेदोक्त धर्म है।

उस युवक में जोश था, जुनून था। वह करुणा और मैत्री के भाव से भरा हुआ था। वह अनुचित को उचित मानने को तैयार नहीं था। चाहे वह किसी भी धर्मग्रन्थ में क्यों न लिखा गया हो। उसने कहा - जो वेद हिंसा को उचित मानता है, मैं उस वेद को नहीं मानता। वह वेद के खिलाफ हो गया। वेदपोषित धर्म के खिलाफ हो गया।

लगभग ढाई हजार वर्ष बाद इस घटना की फिर पुनरावृत्ति होती है। गुजरात के टंकारा ग्राम में तीव्र मेधा संपन्न, प्रेम, दया और करुणा से परिपूर्ण हृदय वाले मूलशंकर का जन्म हुआ। सिद्धार्थ के जीवन में जीवन की चार अवस्थाओं के ज्ञान का जिक्र होता है। मूलशंकर ने भी चाचा और बहन की मृत्यु के रुप में जीवन के उसी सत्य का साक्षात्कार किया। वे मृत्यु को जानकर उससे परे जाने की बात सोचते थे। यही घटना उनके वैराग्य का सोपान बनी। उन्होंने सिद्धों, संतों, तपस्वियों का संग किया। कई-कई दिनों तक निराहार रहे। हिमालय की कंदराओं में तपस्या की। बर्फीली नदियों को पार किया। समाधि में लीन रहे। गुरुवर विरजानन्द की शरण में शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्ञान और तप के सर्वोच्च शिखर को छुआ। वे भी अपने करुणापूर्ण चित्त से प्रेरित होकर गुरुदेव की आज्ञा लेकर देश का भ्रमण करने निकल पड़े। तथाकथित ब्राह्मणों का समाज में वर्चस्व था। सती प्रथा के नाम पर स्त्रियों को जिन्दा जलाया जा रहा था। स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार न था। बालविवाह, नारी-शिक्षा, विधवाओं पर अत्याचार, अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिप्रथा जैसी न जाने कितनी कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था। बलिप्रथा के नाम पर रक्त तब भी बह रह था। इस दृश्य ने मूलशंकर (दयानन्द) को हिलाकर रख दिया। मानवीय संवेदना से भरा उनका चित्त बेचैन हो उठा।

वे रात को उठकर रोते थे जब सारा आलम सोता था।

वही सवाल जो ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने उठाया फिर उठा। इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है ? मानव-मानव के बीच ऊंच-नीच की रेखा किसने खींची। नारी को पढ़ने का अधिकार क्यों नहीं है। सबने एक ही स्वर में फिर वही जवाब दिया - वेद में लिखा है। यह वेदोक्त धर्म है।

सवाल भी लगभग यही था। जवाब भी वही था। अंतर था तो मूलशंकर और सिद्धार्थ की प्रतिक्रिया में। सिद्धार्थ बिना क्षण गंवाये कह दिया - मैं ऐसे वेद को नहीं मानता, जो समाज को हिंसा की प्रेरणा देता है। मूलशंकर (महर्षि) ने कहा- मुझे दिखाओ तो सही वेद में लिखा कहां है ? मैं वेद का स्वाध्याय करूंगा। वेद पढ़ूंगा, उनका आलोडन करूंगा, मंथन करूंगा, विवेचन करूंगा। महर्षि वेद के खिलाफ नहीं हुए। उन्होने वेदों को पढ़ा और पाया कि - **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।** उन्होने वेद को इतना गहराई से पढ़ा कि वे वेदोंवाले स्वामी ही बन गए। वैदिक ज्ञान को विज्ञान में जोड़ने वाले आधुनिक युग में वे प्रथम व्यक्ति थे। अगर दयानन्द नहीं होते तो शायद हम सबके घर में एक सिद्धार्थ होता, जो ऋषि-मुनियों द्वारा पोषित वैदिक धर्म को नकार रहा होता। महर्षि ने न जाने कितने नास्तिकों को आस्तिक बनाया। तर्क संपन्न-आंग्लशिक्षा में प्रभावित मुंशीराम और गुरुदत्त जैसे न जाने कितने युवाओं के मलीन मन को महर्षि के जीवन ने वैदिक आस्था के गंगाजल में परम पावन और प्रेरक बनाया दिया था।

महर्षि दयानन्द की सामयिकता

आज गली-गली में शराब की दुकानें हैं। शिक्षा की सजी हुई तथाकथित दुकानों में चारित्र को चाक पर रखा जा रहा है। मां-बाप वृद्धाश्रम की शोभा बन रहे हैं। युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से दूर हो गई है। नित नए-नए गुरुओं का डंका बज रहा है। देश की जनता को बरगलाकर कृपा कर कारोबार किया जा रहा है। आज अगर हम अपने पीढ़ी को भौतिकता की चकाचौंध में खोते हुए नहीं देखना चाहते तो वे (महर्षि दयानन्द) सामयिक हैं। आज अगर हम नहीं चाहते कि हमारी पीढ़ी नैतिक मूल्यों से दूर हो तो वे सामयिक है।

देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। अज्ञान-अन्याय और अभाव को दूर करने में हम असमर्थ रहे हैं। अज्ञान से लड़ने वाले ब्राह्मणों का समाज में अभाव है। अन्याय से निजात दिला सकने वाली छात्रशक्ति कहीं अदृश्य हो गई है। समाज का अभाव दूर कर सकने वाले वैश्य कहीं दिखाई नहीं देते। वर्णव्यवस्था के बिना इसका समाधान कैसे होगा। अज्ञान के अभाव में अंधविश्वास तथा पाखण्ड का प्रचार हो रहा है। वर्णव्यवस्था के सामाजिक मनोविज्ञान को दयानन्द के बिना समझा नहीं जा सकता। फलित ज्योतिष और कृपा का कारोबार करने वालों की कतार दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। मंदिरों के नाम पर करोड़ों का वारा न्यारा किया जा रहा है। जिन मंदिरों को समाज सुधार का केन्द्र बनने में कोई ज्यादा देर नहीं है। भारतीय धर्म तथा अध्यात्म को नीचा दिखाने की नित नई कोशिश की जा रही है। महर्षि दयानन्द केतर्कतीक्ष्णशरोके बिना इस महायुद्ध में विजयी नहीं बना जा सकता। वेदादि शास्त्रों तथा तत्पोषित धर्म की रक्षा के लिए महर्षि के विचारों की सामयिकता हमेशा बनी रहेगी।

जब जब वेदों की सामयिकता तथा उसकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की चर्चा होगी तब ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की याद जरुर आयेगी। जब धर्म की आड़ में पल्लवित इन विविध सम्प्रदायों, पन्थों के विश्लेषण की गहराई में कोई उतरने का साहस करेगा **"सत्यार्थ प्रकाश"** का प्रकाश उसका मार्ग प्रशस्त करेगा। जब कभी मानव निर्माण की विधि को खोजने का प्रयास किया जायेगा, **"संस्कार विधि"** मानव निर्माण के विज्ञान को परिभाषित करती हुई परिलक्षति होगी। मानव व्यवहार के विज्ञान की समझ को जब आगे बढ़ाने की कोशिश की जायेगी महर्षि दयानन्द प्रणीत **"व्यवहारभानु"** मानव मनोविज्ञान के आकाश में अपनी किरणें प्रसारित करता नजर आयेगा। जब जब समाज सुधारकों की गणना की जायेगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द उस आकाश में चमकते हुए ध्रुव तारे की भांति दिखाई देंगे। महर्षि ने वैदिक ध्वजा लेकर पुरातन ज्ञान के जल से नवीन जगत के क्षेत्र में सींचा है। नारी को अबला से सबला बनाकर उन्होने गार्गी-दुर्गा, मदालसा और दुर्गा तक बनने का अधिकार दिया। नारी जाति के सम्मान के सच्चे अधिकारी वहीं है। जाति-पाति का भेद भूलकर उन्होने कहा कि हम सब ईश्वर पुत्र हैं -

श्रुणवन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

वेदादि शास्त्रों के माध्यम से स्वदेश प्रेम का अलख जगाने वाले ये पहले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि **"जो स्वदेशी राज्य होता है, वो सर्वोपरि होता है।"** महर्षि दयानन्द सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के निर्माता हैं। धर्म को तर्क की कसौटी पर कसने वाले वे पहले धर्म गुरु हैं। सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान उन्हीं का है। महर्षि के विचार आज भी आधुनिक हैं। महर्षि दयानन्द आज भी सामायिक हैं। उनके विचार हमारी तर्कशक्ति को जोवित करते हैं। महर्षि दयानन्द की आँखे हमारा मार्ग प्रशस्त करती है।

आर्यसमाज का प्रचार कार्य

आर्यसमाज के प्रचार कार्य में पहले जैसा जोश नहीं दिख रहा है। हम बड़े-बड़े सम्मेलनों में उलझे हुए हैं। सम्मेलनों में भीड़ के नाम पर आस-पास के आर्यजन जुट जाते हैं। महर्षि दयानन्द जी की जय बोलकर घर लौट आते हैं। मुझे लगता कि यह वेद अथवा आर्यसमाज के प्रचार का कार्य नहीं है। किसी भी सम्मेलन को तब ही सफल मानना चाहिए जब उपस्थित जन-समुदाय का कम से कम दसवां भाग गैर आर्यसमाजी हों। अगर हम अपने से इतर लोगों को नहीं जोड़ पा रहे हैं तो हमें आर्यसमाज के प्रचार के तरीके पर सवाल खड़ा करना चाहिए। प्रचार के लिए बड़ी बड़ी धनराशि की ही जरुरत नहीं होती अपितु बहुत छोटे-छोटे कार्यों से वेदप्रचार के कार्य और आधारशिला रखी जा सकती है।

आर्यसमाज को सामयिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए कार्य करना चाहिए। समाचार पत्रों और फ्लेक्स के माध्यम से इसे जन-जन तक पहुंचाने की कोशिश की जानी चाहिए। दीपावली आदि बड़े पर्वों पर फ्लेक्स के बैनर तैयार करके आर्यसमाज के निकट मुख्य मार्गों में लगाया जाना चाहिए। आर्यसमाज के बाहर वैदिक विद्वानों की सूची उनके संपर्क दूरभाष संख्या के साथ लगाई जा सके तो अच्छा है। श्राद्ध, नवरात्र,

दीपावली तीर्थ स्थान तथा भारतीय पर्वों आदि के अवसरों पर महर्षि दयानन्द के हृदयस्पर्शी वाक्यों का प्रचार किया जाना चाहिए। वैदिक सत्संगों के स्तर को ऊपर उठाने की कोशिश की जानी चाहिए। हम छोटे-छोटे विज्ञापनों में स्वामी जी के विचारों के आधार पर छोटे-छोटे लेख तैयार करके जनता तक पहुंचा सकते हैं। इन प्रयासों में बहुत ही कम खर्च आता है और प्रचार का मार्ग प्रशस्त होता है। वैदिक संस्कारों, यज्ञ, योग, आदि के माध्यम से अच्छा प्रचार होता है। आर्यसमाजियों के बीच आर्यसमाज का प्रचार उचित नहीं।

आर्यसमाज को अपने जनोपयोगी सर्वहितकारी सिद्धान्तों तथा कार्यों को आगे ले जाने काकार्य करने की जरुरत है। आर्यसमाज को अपने सत्संगों में आस-पास के विशिष्ट लोगों को भी विशेष अवसरों पर आमंत्रित करके यजमान बनने की प्रेरणा देनी चाहिए। आर्यसमाज अपने सिद्धान्तों तथा धर्माचार्यों का उपयोग भी आर्यसमाज के प्रभाव को बढ़ाने तथा प्रचार करने के लिए कर सकता है। धर्माचार्यों के कर्मकाण्ड से अनेक श्रद्धालु लोग जुड़े होते हैं, उन्हें आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया जा सकता है। आर्यसमाज की गतिविधियों से संबंधित विज्ञान उन तक पहुंचाएँ जा सकते हैं। आर्यसमाज के लिए दान भी एकत्रित किया जा सकता है। हम जब दिल्ली में थे तो हमने देखा था कि आर्यसमाज के धर्माचार्य कर्मकाण्ड करते समय अपने साथ आर्यसमाज की दान-रसीद अपने साथ रखते थे। कर्मकाण्ड और अपनी दक्षिणा के पश्चात् वे आर्यसमाज की रसीद निकालते थे। इससे आर्यसमाज के प्रचार के लिए पर्याप्त धन एकत्रित हो जाता था। धन-संग्रह की यह परम्परा मुझे बहुत ही सार्थक लगी। आर्यसमाज अपने ऐसे श्रद्धालुओं, जो सिर्फ कर्मकाण्ड के लिे आर्यसमाज में आते हैं, को भी आर्यसमाज से जोड़ सकता है। ऐसे सज्जनों को स्वमंतव्यामंतव्य प्रकाश जैसी छोटी-छोटी पुस्तकें भेंट की जा सकती है। सत्यार्थ प्रकाश को समझने तथा पढ़ने के लिए बुद्धि तथा मनोभावों का विशिष्ट स्तर अपेक्षित होता है, जो प्रथम बार आर्यसमाज के संपर्क में आने वाले व्यक्ति मे नहीं होता है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तं से ओतप्रोत गृहस्थ जीवन पर लिखी हुई पुस्तकें भेंट की जा सकती है। अगर आर्यसमाज की किसी पत्रिका का वार्षिक सदस्य उन्हें बनाया जाये तो वह आर्य पत्रिकाओं के लिए जीवनदायी भी हो सकता है।

आर्य वैदिक सत्संग

आर्य वैदिक सत्संग को भी वेदप्रचार का केन्द्र बनाया जा सकता है। पाखण्ड और अन्धविश्वास का प्रसार करने तथा गुरुडम फैलाने वाले सत्संगों की भीड़ बढ़ती जा रही है। प्रत्येक आर्यसमाज को महीने में एक विशिष्ट वैदिक सत्संग का आयोजन करना चाहिए। इसकी योजना प्रथम सप्ताह में ही तैयार कर ली जानी चाहिए। आस-पास के विशिष्ट आर्य का उद्बोधन हेतु आमंत्रित किया जाना चाहिए। संभव हो तो माह में आने वाले विशिष्ट त्योहारों पर्वों में ऐसे आयोजन किये जाएँ। इन आयोजनों में सदस्यों को सपरिवार आने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

आजकल आर्यसमाज में आर्यसमाजी तो हैं किन्तु आर्य परिवारों की संख्या धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। आर्यसमाज अपने धर्माचार्यों को आपस अदल-बदलकर भी उद्बोधन के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। दीपावली-मिलन, होली-मिलन, आर्यपरिवार मिलन समारोह जैसे आयोजनों के परिवारों की भागीदारी बढ़ती है। शहर की आर्यसमाजें आपस में मिलकर शहर स्तर के आयोजन कर सकती हैं। कोशिश यह की जानी चाहिए कि आयोजन का उद्देश्य अपने सिद्धान्तों का प्रचार तथा अपने संगठन को मजबूत करना ही हो।

पता - जेन-१२, गणपति विहार, दुर्ग (छ.ग.)

राज-सभा

इच्छेयस्तु सुखं नियस्तुमदनी गच्छेत्स राज्ञः सभां,
कल्याणी गिरमेव संसदि वदेत्कार्यें विदध्यात्कृती।
अक्लेशाद्धनर्जयेवधिपते रावर्जयेद्धल्लभान्,
कुर्वोतोपकृतिः जनस्य जनयेत् कस्यापि नापक्रियाम्॥

जो मनुष्य पृथ्वी पर सुखपूर्वक रहने की इच्छा करे वह चतुर व्यक्ति राजा की सभा में जायें, उस सभा में हितकारी बात ही बोले, अपना कार्य सिद्ध करे, बिना क्लेश के ही धनोपार्जन करे, राजा के प्रियजनों को सन्तुष्ट करें, उपकार करें, किसी भी व्यक्ति की बुराई न करें।

- विश्वगुणादर्शचम्पू (१२१)

पुण्य स्मरण

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

५ नवम्बर जयन्ती

भाई परमानन्द इस युग की एक महान् विभूति थे। वे भारत माता के एक यशस्वी सपूत थे। वे मृत्युञ्जय थे। वे एक अमर बलिदानी थे। वे एक दार्शनिक और क्रांतिदर्शी थे। वे सत्यनिष्ठ थे। सत्य के लिए बड़े-से बड़ा बलिदान दिया। वे सिद्धान्तों का सौदा न कर सकते थे। वे किसी तात्कालिक लाभ के लिए सचाई को बेचना या स्वयं बिकना नहीं जानते थे। उन्होंने देशहित में, परहित में कौन-सा कष्ट है जो नहीं झेला ! देश-जाति के लिए सब करणीय कार्य किए, परंतु - काम थे निष्काम क्या बदले में पाया ? वे मानवता का मान थे। एक ऊँचे समाज-सुधारक थे। लोग जातिभेद-निवारण की बातें-ही-बातें करते हैं। भाईजी ने अपने व्यवहार से जाति-पांति की बंधन-कड़ियां आज से साठ वर्ष पूर्व तोड़कर दिखाई। वे महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा के आदर्श तपस्वी सन्त थे। उन्होंने अपनी मान्यताओं के लिए तिरस्कार पाया। अपमान का विषपान करते रहे। देशवासियों ने उनकी हितकर सीख न सुनी परन्तु वे अपनी डगर पर चलते रहे और अपनी कहते-सुनाते रहे। देश उनकी सुन लेता तो मातृभूमि के टुकड़े न होते। ये दुर्दिन न देखने पड़ते। भाईजी की धुन को हम आचार्य चमूपति जी की पंक्तियों में ऐसे कहेंगे -

कहती है, कहे बुरा दुनिया, इस कुलटा को पतियाना क्या ?
जब प्रेम-गली में पाँव भरा, तब अपयश से घबराना क्या ?
मत चेत, हृदय हो मस्ताना- चेता तो फिर मस्ताना क्या ?
रह अपनी धुन में मस्त, न सुन है कहता तुझे जमाना क्या ?

भाई जी की कोटि का विचारक, सुधारक, तपस्वी, बलिदानी, शिक्षाशास्त्री व लेखक पश्चिम के किसी देश में जन्म लेता तो उन पर पचासों ग्रन्थ लिखे जाते। यहाँ-वहाँ उनकी प्रतिमाएँ स्थापित होतीं। उनके नाम पर कई नगर व ग्राम बसते, परन्तु इस देश ने उनको नहीं पहचाना। भाई जी का जीवन बड़ा महत्वपूर्ण था।

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

बिना विचारे स्थान न छोड़े

तिष्ठत्येकेन पादेन,
चलत्येकेन पंडितः ।
न परीक्ष्य परं स्थानं,
पूर्वमायतनं त्यजेत् ।।

(व्यास)

भावार्थ : बुद्धिमान् पुरुष को चाहिए कि - जब तक अपना अगला पैर कहीं जमा न लेवे, तब तक पिछला पैर न उठाए। मान लीजिए - आप आज जिस स्थिति में हैं, यदि उससे असन्तुष्ट होकर आगे के स्थान की बिना परीक्षा किए जा बैठते है तो दोनों ओर से जावेंगे पहिले स्थान की अच्छी तरह परीक्षा कर लीजिए पुनः उसका त्याग कर अगले स्थान पर जमने का विचार कीजिए।

- सुभाषित सौरभ

मार्शल आर्ट कराटे

जो महिलाओं से छेड़छाड़ और युवतियों पे आंखे गड़ाते हैं।
उन बदमाशों को समझाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो गरीबों पे अन्याय और अमीरों का लूटकर खाते हैं।
उन चोरों से निपटने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो कमजोरों का अपहरण और बेगुनाहों का खून बहाते हैं।
उन गुंडों को सबक सिखाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो गांव समाज में भ्रष्टाचार और देश में हिंसा फैलाते हैं।
उन दुश्मनों को जवाब देने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।
जो चोरी बदमाशी गुंडागर्दी, और हत्या भी कर जाते हैं।
उन गुनाहगारों को सजा दिलाने के लिए, मार्शल आर्ट कराटे है।

रचयिता - आर्य मैकूलाल पांडे,
ग्राम-पतेरापाली (स), जिला महासमुन्द (छ.ग.) ४९३४४९

दयानन्द तुम्हें जान न पाये

दयानन्द तुझे हम जान न पाये
जाति पे इस लिये है गम के साये

(१)

त्याग और तपस्या की तस्वीर था तू,
उजड़ते भारत की तकदीर था तू
लोहा ज्ञान का था माना सभी ने
पीर सत्य का तुझे जाना सभी ने
धरोहर तुम्हारी बचा हम न पाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(२)

कुछ अंश तेरा तो श्रद्धानन्द में था
लेखराम ने इसे खून से सींचा
गुरुदत्त ने अपनी जवानी लगाई
तो आर्यसमाज अपने रूप में आई
बिस्मिल ने शहादत के गीत थे गाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(३)

लाला लाजपतराय ने था डंका बजाया
नारायण स्वामी ने इसको सजाया
स्वतंत्रानन्द ने था, खूब संवारा
देखा हैदराबाद में इसका नजारा
उपाध्याय लेखनी के जादू जगाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

(४)

जो पाला दयानन्द का हर व्रत होता
तो हिन्दुस्तान यह आर्यावर्त होता
क्या कहें आपस में हम लड़ते रहे
सत्ता मोह में ऐसे काम करते रहे
"मोहन" अपनी हालत बताई न जाये
दयानन्द तुझे हम जान न पाये .... ।

★ मोहनलाल चड्डा ★
१७३, एमआईजी-॥, हुडको, भिलाई (छ.ग.)

१५ नवम्बर जयंती

स्वामी दर्शनानन्द

- डॉ. अशोक आर्य (मण्डी डबवाली), आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा

आर्य समाज के महान् दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म कुलीन ब्राह्मण रामप्रताप निवासी जगराओं जिला लुधियाणा, पंजाब के यहाँ माघ कृष्ण १० सं. १९१८ वि. (इस वर्ष १५ नवम्बर जन्म दिन) को हुआ। आरंभिक नाम नेतराम को बदल कर कृपाराम रखा गया। फारसी व संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की तथा ११ वर्ष की आयु में विवाह हो गया। वैराग्य वृत्ति वाले कृपाराम ने पिता के व्यापार को सम्भालने में कुछ भी रुचि न ली। घूमते हुए अमृतसर में महर्षि के विचार सुन नवीन वेदान्ती कृपाराम पर दयानन्द का रंग चढ़ गया। आपने महर्षि के ३७ व्याख्यान सुने तथा इतने वर्ष ही आर्य समाज की सेवा का गौरव भी पाया। काशी जाकर दर्शनों का विस्तृत अध्ययन किया तथा जो पैसा वह लेकर गए थे, उससे काशी में **"तिमिर नाशक यन्त्रालय"** स्थापित किया। यहां से व्याकरण व अनेक आर्ष ग्रन्थ छापकर विद्यार्थियों को सस्ते दामों में दिये। इससे छात्र मण्डली में अच्छी प्रसिद्धि मिली। १९९३-९४ में पंजाब तथा १८९९-१९०० में आगरा में प्रचार किया तथा लघु प्रचार पुस्तकें लिखना, व्याख्यान देना व शास्त्रार्थ आपके दैनिक कर्म बन गए। आगरा में ही पं. भीमसेन शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ तथा अगले वर्ष ही गंगातट के राजघाट स्थान पर स्वामी अनुभवानन्द से संन्यास लेकर दर्शनानन्द स्वामी के नाम से प्रचार में जुए गए।

आर्य समाज के शास्त्रार्थियों में आप का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी मतानुयायियों से अनेक शास्त्रार्थ किये। इस क्षेत्र में आपने अपनों को भी नहीं छोड़ा तथा वृक्षों में जीव विषय पर पं. गणपति शर्मा जी से भी उलझ पड़े, जो कि आर्यसमाज के सम्मानित प्रवक्ता थे। आपने प्रचार में पत्र व पत्रिकाओं के महत्व को खूब पहचाना। अतः आपने एक के बाद एक कुल एक दर्जन के लगभग उर्दू व हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके प्रचार काल में आपके प्रचार क्षेत्र की भाषा उर्दू होने के कारण आपका अधिकांश लेखन व अधिकांश पत्रिकाएं उर्दू में ही रहीं। यह सब करते हुए भी आपने गुरुकुलों की वृद्धि में अपना पूरा ध्यान दिया। आप गुरुकुल शिक्षा के महत्व को अच्छी प्रकार समझते थे। आप नेतागिरी पसन्द न करते "काम करो व भूल जाओ" की भावना आपमें अति बलवती थी। इसीके मध्य दृष्टि आपकी सदा यही नीति रही कि आपने मेहनत करके गुरुकुलों की स्थापना की, अच्छी प्रकार व्यवस्थित होने के पश्चात् इन्हें सुयोग्य हाथों में सौंप दिया। आपने सिकन्दराबाद से रावलपिंडी तक अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। वर्तमान गुरुकुल ज्वालापुर भी आपके प्रताप का ही गुणगान कर रहा है। जहां तक लेखिनी का प्रश्न है. इस क्षेत्र में भी आपकी देन अभूतपूर्व ही रही है। आपने जितनी मात्रा में तथा जितना गुणों से युक्त साहित्य विरासत में दिया, इतना बहुत कम आर्य महापुरुष ही लिख पाए हैं। आपके लेखन के विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन किसी गहन प्रचारात्मक विषय पर एक लघु पुस्तक लिखा करते थे। इनकी निश्चित संख्या बताना अनुमान से परे हैं। दर्शनों पर आपके तार्किक भाष्य तथा छः उपनिषदों पर अत्यन्त सरल व्याख्या देकर इसे आपने सर्व सुलभ बना दिया। मनु स्मृति व गीता की टीका भी आपकी लेखनी के दर्शन कराती है। भारी संख्या में अन्य मतों की समीक्षा में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। आप न केवल नियमित देशाटन करते रहे अपितु लेखन, प्रचार व शास्त्रार्थों में भी आपने कभी विराम न आने दिया। परिणामस्वरुप स्वास्थ्य में गिरावट आना स्वाभाविक ही था। अतः हाथरस अस्पताल में चिकित्सा के मध्य आपका देहान्त ११मई को हो गया। आपके निधन से एक महान् शास्त्रार्थ अद्वितीय प्रचारक, अभूतपूर्व वैदिक लेखक, गुरुकुलों की संख्या बढ़ाने वाला यह सितारा ऐसा विदा हुआ कि इस क्षति को पूरा कर पाना हमारे लिए असम्भव हो गया। यदि उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लेकर हम भी स्वाध्याय व प्रचार को बढ़ा सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

१७ नवम्बर
पुण्यतिथि

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

- अनिल कुमार आर्य

लाला लाजपतराय जी बहुमुख प्रतिभा के धनी थे। यह एक लेखक, राजनीतिज्ञ, उत्कृष्ठ समाजसेवी, पंजाब नेशनल बैंक व लक्ष्मी इंश्वारेंस कंपनी के संस्थापक भी थे, किन्तु उनकी सर्वाधिक प्रसिद्धि एक महान स्वतन्त्रता सेनानी के रुप में ही है।

प्रारंभिक जीवन व समाज सेवा :- लालाजी का जन्म २८ जनवरी १८६५ को पंजाब राज्य के मौंगा जिले के दूधिके गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री लाला राधाकिशन आजाद जी सरकारी स्कूल में उर्दू के शिक्षक थे जबकि उनकी माता देवी गुलाबदेवी धार्मिक महिला थीं। लाला जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे व धन, आदि की अनेक कठिनाईयों के पश्चात् भी उन्होने उच्च शिक्षा प्राप्त की। १८८० में कलकत्ता यूनिवर्सिटी व पंजाब यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षाएँ पास करने के बाद उन्होंने लाहौर गवर्नमेंट कालेज में दाखिला ले लिया व कानून की पढ़ाई प्रारंभ की। लेकिन घर की माली हालत ठीक न होने के कारण दो वर्ष तक उनकी पढ़ाई बाधित रही। लाहोर में बिताया गया समय लाला जी के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ और यहीं उनके भावी जीवन की रुपरेखा निर्मित हो गयी। उन्होने भारत के गौरवमय इतिहास का अध्ययन किया और महान भारतीयों के विषय में पढ़कर उनका हृदय द्रवित हो उठा। यहीं से उनके मन में राष्ट्र प्रेम व राष्ट्र सेवा की भावना का बीजारोपण हो गया। कानून की पढ़ाई के दौरान लाला हंसराज व पं. गुरुदत्त जी जैसे क्रांतिकारी के संपर्क में आये। यह तीनों अच्छे मित्र बन गये और १८८२ में आर्यसमाज के सदस्य बन गए। उस समय आर्यसमाज समाज सुधार की दिशा में महत्वपूर्म भूमिका निभा रहा था और पंजाब के युवाओं में अत्यधिक लोकप्रिय था।

१८८५ में उन्होंने लाहोर के गवर्नमेंट कालेज से द्वितीय श्रेणी में वकालत की परीक्षा पास की और हिसार में अपनी कानूनी प्रेक्टिस प्रारंभ कर दी। प्रेक्टिस के साथ-साथ वह आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता भी बने रहे। स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अंग्लो वैदिक कालेज हेतु धन एकत्रित करने में सहयोग किया। ***आर्यसमाज के तीन लक्ष्य थे : समाज सुधार, हिन्दू धर्म की उन्नति और शिक्षा का प्रसार।*** वह अधिकांश समय आर्यसमाज के सामाजिक कार्यों में ही लगे रहते। वह सभी सम्प्रदायों की भलाई के प्रयास करते थे और इसी का नतीजा था कि वह हिसार म्युनिसिपल्टी हेतु निर्विरोध चुने गए जहां की अधिकांश जनसंख्या मुस्लिम थी।

समाजसेवा और राजनीतिक जीवन :- लाला जी के मन में अब स्वतन्त्रता की उत्कट भावना पैदा हो चुकी थी और इसीलिए १८८८ में २३ वर्ष की आयु में उन्होंने समाज सेवा के साथ - साथ राजनीति में भी प्रवेश किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बन गए। जब पंजाबी प्रतिनिधिमंडल के साथ उन्होने इलाहाबाद में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया तो उनका जोरदार स्वागत हुआ और उनके उर्दू भाषण ने सभी का मन मोह लिया। अपनी योग्यता के बल पर वह जल्द ही कांग्रेस के लोकप्रिय नेता बन गए। लगभग इसी समय जब सर सैय्यद अहमद खान ने कांग्रेस से अलग होकर मुस्लिम समुदाय से यह कहना शुरु किया कि उसे कांग्रेस में जाने की बजाय अंग्रेज सरकार का समर्थन करना चाहिए तब लाला जी ने इसके विरोध में उन्हें कोहिनूर नामक उर्दू साप्ताहिक में खुले पत्र लिखे जिन्हें काफी प्रशंसा मिली।

१८९२ में पंजाब हाईकोर्ट में वकालत करने हेतु वह हिसार से लाहोर चले गए। यहां भी लालाजी राष्ट्र सेवा में जुटे रहे। उन्होने लेखन द्वारा भी अपना प्रेरक कार्य जारी रखा और शिवाजी, स्वामी दयानन्द, मेजिनी, गैरीबाल्डी जैसे प्रसिद्ध लोगों की आत्मकथाएँ अनुवादित

व प्रकाशित की। इन्हें पढ़कर अन्य लोगों ने भी स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त की।

लालाजी जन सेवा के कार्यों में तो सदैव ही आगे रहते थे इसीलिए १८९६ में जब सेन्ट्रल प्रोविंस में भयानक सुखा पड़ा तब लाला जी ने वहां अविस्मरणीय सेवाकार्य किया। जब वहां सैकड़ों निर्धन, अनाथ, असहाय मात्र ईसाई मिशनरियों की दया पर निर्भर थे और वह उन्हें सहायता के बदले अपने धर्म में परिवर्तित कर रही थीं तब लालाजी ने अनाथों के लिए एक आन्दोलन चलाया व जबलपुर, बिलासपुर आदि अनेक जिलों के २५० अनाथ बालकों को बचाया और उन्हें पंजाब में आर्यसमाज के अनाथालय में ले गये। उन्होने कभी भी धन को सेवा से ज्यादा महत्व नहीं दिया और जब उन्हें प्रतीत हुआ की वकालत के साथ-साथ समाज सेवा के लिए अधिक समय नहीं मिल पा रहा है तो उन्होने अपनी वकालत की प्रेक्टिस कम कर दी।

इसी प्रकार १८९९ में जब पंजाब, राजस्थान, सेन्ट्रल प्रोविंस आदि में और भी भयावहग अकाल पड़ा और १९०५ में कांगड़ा जिले में भूकंप के कारण जन-धन की भारी हानि हुई तब भी लालाजी ने आर्यसमाज के कार्यकर्ता के रुप में असहायों की तन-मन-धन से सेवा सहायता की। उन्होने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस में उन्होने रचनात्मक, राष्ट्रनिर्माण व आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। कांग्रेस में वह बाल गंगाधर तिलक जी व बिपिनचन्द्र पाल जी के साथ उग्रवादी विचारधारा से सहमत थे और यह तीनों लाल-बाल-पाल नाम से प्रसिद्ध थे। जहां उदारवादी कांग्रेसी अंग्रेज सरकार की कृपा चाहते थे वहीं उग्रवादी कांग्रेसी अपना हक चाहते थे लाला जी मानते थे कि स्वतंत्रता भीख और प्रार्थना से नहीं बल्कि संघर्ष और बलिदान से ही मिलेगी।

बंगाल विभाजन के समय उन्होने भी स्वदेशी, स्वराज और विरोध के राष्ट्रिय आन्दोलन में बढ़-चढ़ के भाग लिया। १९०६ में जब कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी धड़ों में विवाद हुआ तब उन्होंने मध्यस्थता करने का बहुत प्रयास किया। १९०७ में जब तिलक जी ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद हेतु उनका प्रस्तावित किया लेकिन विवाद की संभावना देखते हुए लाला जी ने अपना नाम आगे नहीं बढ़ने दिया। लाला जी मानते थे कि राष्ट्रीय हित के लिए विदेशों में भी भारत के समर्थन में प्रचार करने हेतु एक संगठन की जरुरत है ताकि पूरी दुनिया के सामने भारत का पक्ष रखा जा सके और अंग्रेज सरकार का अन्याय उजागर किया जा सके। इसीलिए १९१४ में वह ब्रिटेन चले गए। यहां से वह अमेरिका गए जहां उन्होने **इंडियन होम लीग सोसायटी ऑफ अमेरिका** की स्थापना और यंग इंडिया नामक पुस्तक लिखी। इसमें अंग्रेज सरकार का कच्चा चिट्ठा खोला गया इसीलिए ब्रिटिश सरकार ने इसे प्रकाशित होने से पूर्व ही इंग्लैण्ड और भारत में प्रतिबंधित कर दिया। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् वह भारत वापस आ गए।

उन्होने पंजाब में जालियांवाला नरसंहार के विरोध में असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व किया। १९२५ में वह केन्द्रीय विधानसभा के सदस्य भी चुने गए।

मृत्यु :- १९२८ में सात सदस्यीय सायमन कमीशन भारत आया जिसके अध्यक्ष सायमन थे। इस कमीशन को अंग्रेज सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों हेतु सुझाव देने के लिए नियुक्त किया था जबकि इसमें एक भी भारतीय नहीं था। इस अन्याय पर भारत में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूरे देश में सायमन कमीशन के शांतिपूर्ण विरोध का निश्चय किया। इसीलिए ३० अक्टूबर १९२८ को सायमन कमीशन लाहोर पहुंचा तब वहां उसके विरोध में लाला जी ने मदन मोहन मालवीय जी के साथ शांतिपूर्ण जुलूस निकाला। इसमें भगतसिंह जैसे युवा स्वतन्त्रता सेनानी भी शामिल थे। पुलिस ने इस अहिंसक जुलूस पर लाठी चार्ज किया, इसी लाठीचार्ज में लाला जी को निशाना बनाकर उन पर जानलेवा हमला किया गया जिससे उन्हें घातक आघात लगा अंततः १७ नवम्बर १९२८ को यह सिंह चिर-निद्रा में सो गया। अपनी मृत्यु से पूर्व लाला जी ने भविष्यवाणी की थी कि ***मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेज सरकार के ताबूत में अंतिम कील साबित होगी।*** जो की सच साबित हुई।

पता : पत्थलगांव (छ.ग.)

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से अस्थमा का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

अस्थमा पूरे विश्व में एक सामान्य बीमारी है, जो कि जानलेवा भी हो सकती है। ऐसे में होमियोपैथी उपचार लाभकारी होता है। यह अस्थमा के उपचार के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है और यह चिकित्सा का एक सम्पूर्ण तंत्र है, जो कि शरीर की प्राकृतिक तौर पर अपने आप चंगा होने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। फिर भी होमियोपैथी उपचार शुरु करने से पहले किी होमियोपैथिक चिकित्सक की राय अवश्य लें।

अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैथिक औषधियाँ-

अस्थमा के उपचार के लिये अनेक होमियोपैथिक औषधियाँ बेहद उपयोगी है। अस्थमा के एक गम्भीर दौरे में आपको यह सलाह दी जाती है कि आप एक चिकित्सक से संपर्क करें। अस्थमा के गंभीर दौरे के खत्म होने के बाद होमियोपैथी उपचार लेने से भविष्य में होने वाले अस्थमा की बारंबारता और तीव्रता घट जाती है। अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में आने वाली औषधियों में से कुछ सामान्य **औषधियाँ** - अर्सेनिकम अलबम (अर्सेनिकम) : इस दवा का उपयोग सामान्य तौर पर एक एक्यूट अस्थमा के रोगी के लिए किया जाता है। इसका उपयोग आम तौरपर बैचेनी, भय, कमजोरी और आधी रात को या आधी रात के बाद इन लक्षणों का बढ़ना, जैसे लक्षणों से पीड़ित मरीजों के लिए किया जाता है।

हाऊस डस्ट माईट (हाऊस डस्ट माईट) :- इस दवा का उपयोग अक्सर ऐसे मरीजों के लिये किया जाता है, जिन्हें घर में होने वाली धूल से एलर्जी होती है। चूंकि लोगों में धूल की एलर्जी होना आम बात है, इस दवा को अस्थमा के एक गंभीर दौरे के लिए एक महत्वपूर्ण उपचार माना जाता है।

स्पोंजिआ (रोस्टेड स्पंज) :- यह उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए उपयोग में लाई जाती है, जिनको बेहद कष्टदायी खांसी होती है, और छाती में बहुत कम या बिलकुल भी कफ नहीं होता है। इस प्रकार का अस्थमा एक व्यक्ति को ठंड लगने के बाद शुरु होता है। इन मरीजों में अक्सर सूखी खांसी होती है।

लोबेलिआ (भारतीय तम्बाकू) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन्हें सांस की घबराहट के साथ एक लाक्षणिक (टिपिकल) अस्थमा का दौरा पड़ता है। (इसमें छाती में दबाव का एक अहसास और सूखी खांसी भी शामिल है)।

सेमबकस नाइग्रा (एल्डर) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों में सांस की घबराहट की आवाज के साथ दम घुटनेके लक्षण दिखाई देते हैं, खासकर यदि ये लक्षण आधी रात को या आधी रात के बाद, या लेटने के दौरान या जब मरीज ठंडी हवा के संपर्क में आते हैं, ऐसी स्थिति में अधिक बढ़ते हैं।

इपेकक्युआन्हा (इफेकाक रुट) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों की छाती में बहुत अधिक मात्रा में बलगम होता है।

एंटीमोनियम टेर्टारिकम (टार्टर एमेटिक) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित बुजुर्गों और बच्चों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिनकी पूर्ण श्वसन-प्रश्चसन प्रक्रिया में शिथिलता या तेजी हो।

चामोमिल्ला (चामोमिल्ला) :- ब्रायोनिआ (व्हाईट ब्रायोनी), काली ब्रायक्रोमिकम (बायक्रोमेट ऑफ पोटाश), नक्स वोमिका (पोइटजन नट) जैसी दवाईयां अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में लाई जाती है। नैदानिक जांच से पता जलता है कि अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैथिक दवाईयाँ असरकारक होती है। अस्थमा एक गंभीर बीमारी है, जिसे एक प्रशिक्षित होमियोपैथिक चिकित्सक की देखरेख में ठीक किया जा सकता है। होमियोपैथिक औषधियाँ दीर्घकालिक अस्थमा में लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद करती है। इसलिये योग्य होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह से अस्थमा पर नियंत्रण पाया जा सकता है। कई रोई मेरे द्वारा उपचार कराकर ठीक हो गए हैं और कई रोगियों का उपचार चल रहा है। पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८ में भाग लेने छत्तीसगढ़ प्रान्त से १२०० आर्यों का विशाल जत्था दिल्ली रवाना

दुर्ग। वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८ दिनांक २५ से २८ अक्टूबर २०१८ तक स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सेक्टर-१०, दिल्ली भारत में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में शामिल होने के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्त से आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री एवं कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य के नेतृत्व में लगभग १२०० आर्यों का विशाल जत्था दिनांक २२, २३, २४ अक्टूबर २०१८ को रायपुर, रायगढ़ से दिल्ली के लिए रवाना हो रहा है। **- निज संवाददाता**

वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् समिति के ग्राम यौगिक चिकित्सालय के बाह्य रोगी कक्ष का उद्घाटन सम्पन्न

बोरगांव (बड़े डोंगर) कोण्डागांव। वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् समिति बेड़ागांव-बड़ेडोंगर ग्राम में यौगिक चिकित्सालय के बाह्य रोगी कक्ष का उद्घाटन छत्तीसगढ़ शासन के युवा आयोग के अध्यक्ष कमलचंद्र भंजदेव के मुख्य आतिथ्य एवं छत्तीसगढ़ राज्य अजजा आयोग के अध्यक्ष जी.आर. राणा के विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। सर्वकार के विशिष्टातिथि के तौर पर आयुर्वेद चिकित्साधिकारी डॉ. योगेश विश्वकर्मा एवं डॉ. आर.बी. कुशवाहा एवं डॉ. पी.एल. बनपेला उपस्थित थे।

आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. कुशवाहा एवं डॉ. विश्वकर्मा ने ग्रामीणों एवं स्कूली बच्चों को स्वस्थ जीवन के लिए आयुर्वेद और योग की सामान्य जानकारी देकर अंचल में संचालित वैदिक गुरुकुलम् का लाभ लेने प्रेरित किया। गायत्री परिवार एवं ऋषि विद्यालय के संचालक पं. भरत कुमार साहू एवं बहन पुष्पा साहू ने अपनी टोली के साथ सुमधुर स्वर में आर्ष भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर बड़ेडोंगर के जन प्रतिनिधि विद्यासागर नायक, दुलम चंद्र नाग, यदुदास मानिकपुरी व वीरेन्द्र कुमार चलाप भी मुख्य रुप से उपस्थित थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने इस अवसर पर योगाभ्यास भी किया। इस अवसर पर बड़ी तादाद में ग्रामीण एवं कई स्कूल के बच्चे भी उपस्थित होकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। संवाददाता : डॉ. योगेन्द्र विश्वकर्मा

बड़ेडोंगर गुरुकुलम् में शांति यज्ञ एवं श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन

फरसगांव (कोंडागांव)। दिनांक १७ अक्टूबर २०१८ को वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् बेड़ागांव बड़ेडोंगर कोण्डागांव छ.ग. की अध्यक्षा आचार्या श्रीमती निधि भण्डारी के ससुर स्वर्गीय श्रीमंत् चैतराम भण्डारी जी के तेरहवीं पर गुरुकुलम् व भण्डारी परिवार के समस्त सदस्यों द्वारा संयुक्त रुप से शांति यज्ञ तथा श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य रुप से छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, बस्तर कलार समाज के अध्यक्ष श्रीमंत् दिनेश पोया जी अध्यात्म पिपासु श्रीमंत् श्री बी.एस. भास्कर जी पधारे थे। आचार्य अंशुदेव आर्य जी के ब्रह्मत्व में विशाल यज्ञशाला में शांति यज्ञ का आयोजन किया गया, यज्ञ में स्थानीय वैदिक धर्म प्रेमियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। यज्ञ कार्य में पं. ऋषि आर्य, अनिल आर्य एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सहयोग किया। श्रीमंत् चैतराम भण्डारी जी के श्रद्धाञ्जलि सभा में सभा प्रधान एवं अन्य पधारे अतिथियों ने पगड़ी रस्म की अदायगी की एवं इस अवसर पर सभा प्रधान जी द्वारा सुमधुर भजनोपदेश का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे।

- संवाददाता : डॉ. प्रवीर चंद्रजी

डीएवी इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी में मनाया गया ग्रैंड पेरेंटस् डे

नन्दिनी । डीएवी इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइंस द्वारा वृद्धजन दिवस के अवसर पर कक्षा नर्सरी से कक्षा दूसरी तक के सभी बच्चों के दादा-दादी एवं नाना-नानी को आमंत्रित किया गया और उनके सम्मान तथा उनके प्रति श्रद्धा को व्यक्त करते हुए एक उत्सव मनाया गया । इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम द्वार पर बच्चों द्वारा दादा-दादी और नाना-नानी को तिलक लगाकर चरण स्पर्श करके ससम्मान हॉल के अंदर लाया गया । वहां आने के बाद बिंदु मैडम द्वारा स्वागत भाषण एवं पहली के छात्र-छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया । इसके उपरांत बच्चों द्वारा दादा-दादी, बुजुर्गों और उनके महत्व को समझाते हुए गीत संगीत से सजे एक रोचक नाटक की प्रस्तुति की गई, जिसमें यह संदेश दिया गया कि बिना दादा दादी के बच्चों की परवरिश अच्छे से नहीं हो पाती और माता पिता को भी अपने बड़ों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि बच्चे अपने माता-पिता व जैसा व्यवहार उनके बड़ों के प्रति देखते हैं, वही व्यवहार वे भी अपने बड़ों के साथ करना सीखते हैं। तत्पश्चात प्राचार्य महोदय ने इस कार्यक्रम और बुजुर्गों के प्रति अपना सम्मान और श्रद्धा अपने भाषण के माध्यम से प्रस्तुत की। कुछ ऐसे दादा-दादी जो सदैव अपने बच्चों के प्रति अधिक जागरुक रहते हैं, उन्हें सम्मानित किया गया । उपस्थित दादा-दादी और नाना-नानी ने अपने वक्तव्य में स्कूल के प्रति उनके विचार व्यक्तकिए जिसमें उन्होने कहा कि यह विद्यालय बच्चों को घर परिवार जैसा माहौल देता है और शिक्षिकाएँ मां की तरह बच्चों का ख्याल रखती हैं इस बात से उन्हें बड़ी प्रसन्नता है, साथ ही ऐसा कार्यक्रम उन्होने पहली बार देखा है और भविष्य में बार बार देखने की इच्छा रखते हैं । अंत में शिक्षिका भुवनेश्वरी जायसवाल के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त किया गया । इस कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका सोमा मंडल, सुमन यादव एवं पूनम कुमारी शिक्षिकाओं का योगदान रहा । ***संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इ.प.स्कूल***

डी.ए.वी. नन्दिनी में हुआ पोषक आहार सप्ताह जागरुकता एवं संदेश का आयोजन

नन्दिनी । विगत दिनांक ८ से ११ अक्टूबर २०१८ तक डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइंस में कक्षा-३ से कक्षा १२वीं तक के छात्र-छात्राओं में पोषण आहार के प्रति अपेक्षित जागरुकता लाने के लिए उद्देश्य से पोषण आहार सप्ताह का आयोजन किया गया । विद्यालय के विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इस विशिष्ट कार्यक्रम में भारी संख्या में बच्चों ने शिरकत की । सप्ताह भर चलने वाले इस आयोजन को संतुलित आहार के विविध भाग के लिए अलग-अलग दिन नियत किए गए, जिससे बच्चों में पोषण आहार के प्रति समग्रता का एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके । पहले दिन कार्बोडाइड्रेड डे के रुप में मनाया गया, जबकि दूसरेदिन प्रोटीन के मद्देनजर आहार सामग्री मंगाई गई । तीसरा दिन विटामिन और मिनरल डे के लिए रखा गया । चौथे दिन संतुलित आहार दिवस के रुप में मनाया गया । अंतिम दिन समापन समारोह के अवसर पर विद्यालय के स्थित भवन में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.पी. साहू ने भी सम्मिलित होकर प्रतिभागी छात्र-छात्राओं के उत्साह को द्विगुणीत कर दिया । इस अवसर पर प्रतिभागियों की जबरदस्त हिस्सेदारी को देखकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा - आज वर्तमान जीवन शैली के भयंकर दुष्परिणाम की वजह से दिनों-दिन बच्चों का स्वास्थ्य स्तर गिरता जा रहा है । ऐसी परिस्थिति में उचित खान-पान की जानकारी का होना आज और भी बहुत आवश्यक हो गया है । पोषण आहार सप्ताह के अंतिम दिन प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के दौरान भी संतुलित आहार पर केन्द्रित एक संक्षिप्त प्रश्नोत्तरी भी रखी गई, जिसमें सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया गया । इस अवसर पर पोषाण आहार सप्ताह का सफल आयोजन अनेक प्रेरणास्पद यादें दे गया । छात्र-छात्राओं के साथ शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में भूमिका निभाई । सभी सहयोगियों का विद्यालय की विज्ञान शिक्षिका श्रीमती माया विनोद ने तहेदिल से आभार माना ।

संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इ.प.स्कूल

दीपमालिका की शुभकामना

दुखदारिद्र्यरोग प्रवृद्धं तमो,
नैव दृश्येत भूमौ कुहापि प्रभो ।
सन्तुसर्वत्र सर्वे सदानन्दिताः,
राजतां दीपमालेयमालोकिनी ।।

भावार्थ :- इस दीपोत्सव के पावन अवसर पर हे प्रभो ! ऐसी कृपा करना कि इस भूमण्डल पर दुख दरिद्रता व रोगरुप अंधकार कहीं पर भी न दिखाई दे। सर्वत्र सभी प्राणी सर्वदा आनन्दित रहें। अन्धकार को विदीर्ण कर देनेवाली यह दीपमाला जनमानस को उत्प्रेरित करती हुई देदीप्यमान रहे।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारीगण, अंतरंग सदस्य व अग्निदूत परिवार

एक वर्षीय अद्‌भुत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र हरियाणा में सम्पन्न

हरियाणा । सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पं.) पानीपत हरियाणा द्वारा आयोजित 'अद्‌भुत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का शुभारंभ स्मृतिशेष पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वर जी रोजड़ गुजरात की प्रेरणा व निर्देशन में माननीय कैप्टन श्री अभिमन्यु जी वित्त मंत्री हरियाणा सरकार के सान्निध्य में १.१०.१७ को ग्राम बसई (गुरुग्राम) हरियाणा में हुआ। जिसका समापन समारोह दि. ३०-९-२०१८ को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महामहिम डॉ. देवव्रत आचार्य जी, राज्यपाल हिमालच प्रदेश ने की, उन्होंने २ लाख रुपये का आर्थिक सहयोग करने की घोषणा भी की। कार्यक्रम में पधारे महानुभावों व विद्वानों का भी सम्मान किया गया। न्यास अध्यक्ष महात्मा वेदपाल आर्य ने सभी आमंत्रित महानुभावों, विद्वानों, भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे यज्ञप्रेमी श्रद्धालुओं, ग्राम बसई के निवासियों, आर्यसमाज बसई के सभी अधिकारियों व सदस्यों का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

संवाददाता - कमलकान्त आर्य, पानीपत

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् समिति बेड़ागांव (बड़ेडोंगर) द्वारा यौगिक चिकित्सालय के बाह्य रोगी कक्ष का उद्घाटन की झलकियाँ

बड़ेडोंगर (कोण्डागांव) छ.ग. के वैदिक गुरुकुलम् में सम्पन्न शांति यज्ञ एवं श्रद्धाञ्जलि सभा की चित्रमय झलकियां

CHH-HIN/2006/17407 नवम्बर 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001